—: सूचि :—

ॐ

श्री पार्श्वनाथ प्रभू का स्तवन

पार्श्व जिनेश्वर पूरो आशा, आनन्द मंगल लील विलासा ।
आप थारी जिन नाम जपीजे, सेवक मन वंछित पूरीजे ।
काशी देश बणारसी धाम, इन्द्रपुरी जाणे अभिराम ।
अश्वसेन राजा तिहां राजे, भूरमणी सिर तिलक विराजे ।
तसुघर वामा छे पटराणी, गुणमणि रूप रंभा समानी ।
प्राणत् देवलोक थी चवि आया स्वप्ना चवुदस वामा पाया ।
स्वप्न सुणी राजा करें विचारो, पुत्र होसी त्रिभुवन पति सारो ।
पोष वदी दशमी दिन आया, छपन कुमारी मंगल गाया ।
इन्द्र नरेन्द्र महोत्सव कीनो, पार्श्व कुमार सुत नामज दीनो ।
दिन २ वाधे पार्श्व कुमारो, मात पिता मन हरखे अपारो ।
जोबन वय परणी प्रभुवारी, नाम प्रभावती जिन सुखकारी ।
तीस वर्ष स्वामी घर वासो, राज विलसे मन मे उल्लासो ।
तिण अवसर लोकांतिक आवे, स्वामीजी वर्षी दान संझावे ।
जोग धरी आप जोत जगावी, आतम संजम लील विहारी ।
नहि संकट विघ्नें आप आणे, शील वहि केवल पाणे ।
शील वर्णी सब दुरत गमाणो, विष सुन्दर अहि कंचन जाणो ।
अविगत चिन्तामणी त्रिभुवन रा स्वामी,

कहत चंद जिन पूर्ण कामी ।

सुनन्द जिन चंदिन रूप धारक सब मंदिर अनुदेशक नाम
चंद्र भणी गर चलित मांहे, जिन भणे सूर नर सब मांहे
स्वामी जी आगर जिन मंदिर, देव भणी सकलाणा वी
प्रभु सेवक गर्वेन्द्र दीवाणें, सवारने अंदर कर पूजा
वादि स्यादि प्रभु नामे, मानें सेवतीन दुःख दूर
गमावे आपण मुक्ति भवनी ने सुजनावें,
स्वामीजी नर्मुं ना मुक्ति मांगी
जे नर भावी वंदन पावे, अनु महाविदेह जग जिन पावें

कलश :-

इम नारवें जिनवर मगल सुख कर,
शेषीतरो जिनवर जग जयें
पामा गुनंदन ज्ञान मंदन गायतो मन मद गयो,
जिन राज जपना जैनपुर में सुखाजी आनंद करें
कर जोड़ि वंदीयें जिन जी श्री संघ में,
मंगल करो श्री संघ में आनंद करो ॥

श्री शान्तिनाथ प्रभू का स्तवन

श्री शांति जिनेश्वर। नमतां सुख अपार ॥
हस्तिनापुर पाटण। विश्वसेन भूपाल ॥
तसघर पटराणी। अचिरा रूप रसाल ॥
सुख सेज्या पोढ़ता। स्वप्न लिया दश च्यार

हिये हर्ष धरीने । जाग्या निण द्विज धार ॥
गज चाल चलंता । आया नरपति पास ॥
कर कमला जोड़ीने । हंस मुख तणी वात ॥
स्वामी चवदे स्वप्ना । राणी लीधा (दीठ) रात ॥
फल तेहनो कहियें । सांभल श्री महाराज ॥
जब बोले राजा । पुत्र होसी प्रधान ॥
वल प्राक्रम पूरो । कुल मंडन अवतार ॥
स्वप्नांरी माला । राणी निश्चय धार ॥
ए ज्येष्ट वदि तेरसने । जनिमया श्री शांति कुमार ॥
इन्द्रादिक मिलने । जन्म महोच्छव कीधो ॥
जोयन में आया । परणिया राज कुमार ॥
रूप रंभा सरखी । बोली अमृत धार ॥
ए दिन २ वधाता । पाम्यां रिद्धि भंडार ॥
खट खंडज नवनिध । चवदे रतन उदार ॥
एक दिन चिन्तवे राजा । ओ संसार असार ॥
सर्व आरम्भ छोड़ीने । लेसूं संजम भार ॥
सुण रतनां राणी । मूर्च्छाणी तत्काल ॥
ए वातां मनि काढ़ो । काढ़ोनी वात रसाल ॥
हियड़ां कांई ओछो । वली आगम किम थासी ॥
गज रथ तुरंगा । धारे लाख चोरासी ॥
छनु क्रोड़ प्यादल । ग्राम छिनानु क्रोड़ ॥
वतीस सहस्र मुकुटधर । राजा सेवा करे कर जोड़ ॥

सुर सोले सहस्त्र । देवीधर लाख पचास ॥
प्रभाते उठके नित्य । नित्य प्रणमें तास ॥
वली चोसठ सहस्त्र । चालंति गजगेल ॥
बोले उत्मा राणी । रूपज मोहम बेल ॥
कण्ठ कोयल बोले । बैनज जेसा जाण ॥
निज राजामुखसे । नेत्र मृगाणी नार ॥
एहवी नारिया ने छोड़ो । कहोनी कोन विचार ॥
विन अपराधयां तजसो । तो कुण राखणहार ॥
राजा नी सैज्या । तड़के तोड़या नेह ॥
ए कह्यो न माने । निणने दीजे छेह ॥
सईयांने छोड़ो । सोभा नहीं इण बात ॥
बिल बिल तो बोले । प्रभुजी कह्यो न जात ॥
राजा उतर आये । सांभल तू पटराणी ॥
सुख भोग भोगंता । पीछे दुरगत सेनाणी ॥
माताने बंधव बैन भाई दास । स्वार्थ रो मेलोजब लगपूरे आस ।
दीखणा रा बादल । क्षण में खेरू थासी ॥
सजनां रो मेलो । बिछड़ीया किम होसी ॥
तिण कारण राणी आदरजो तपसार । चरित्र लेईने टाल्या आत्म दोप ॥

श्री शांति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥
श्री शांति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥

—o—

सुर सोळे सहस्र । देवीधर लाख पचास ॥
प्रभाते उठके नित्य । नित्य प्रणमें ताम ॥
वली चोसठ सहस्र । चालंति गजगेल ॥
बोले उत्मा राणी । रूपज मोहन वेल ॥
कण्ठ कोयल बोले । बेनज जेसा जाण ॥
निज राजामुलसे । नेत्र मृगाणी नार ॥
एहवी नारिया ने छोड़ो । कहोनी कोन विचार ॥
विन अपराध्यां तजसो । तो कुण राखणहार ॥
राजा नी सेज्या । तड़के तोड़या नेह ॥
ए कह्यो न माने । तिणने दीजे छेह ॥
सईयांने छोड़ो । सोभा नहीं इण बात ॥
विल विल तो बोले । प्रभुजी कह्यो न जात ॥
राजा उतर आये । सांभल तू पटराणी ॥
सुख भोग भोगंता । पीछे दुरगत सेनाणी ॥
माताने बंधव बेन भाई दास। स्वार्थ रो मेलोजब लगपूरे आस
दीखणा रा बादल । क्षण में खेरू थासी ॥
सजनां रो मेलो । बिछड़ीया किम होसी ॥
तिण कारण राणी आदरजो तपसार। चरित्र लेईने टाल्या आत्म दोष ॥

श्री शांति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥
श्री शांति जिनेश्वर जाय विराज्या मोक्ष ॥

——०——

"सीख"

तर्ज :—जावो जावो ए मेरे साधु रहो गुरु के संग……

जावो जावो ऐ प्यारी वेटी रहो खुसी के साथ ॥ टेर
चौदह वर्ष तक घर आंगन में खेली धूम मचाई।
आज लाड़ली एक पलक में तूँ हो गई पराई ॥१॥
सभी तरह की सही मुसीवत पाली और पढ़ाई।
दूर हृदय से होती है तूँ आज हृदय की जाई ॥२॥
लड़ी रूठी जिद भी करती यहां तो खट गई मैना।
वह है देश विराना वहां पर चतुराई से रहना ॥३॥
आज विदा करने में तुमको हृदय फटा जाता है।
मत रोवो ए वेटी जग का ऐसा ही नाता है ॥
सासु सुसर और पति देव की सेवा खूब बजाना
ननद देरानी जेठानी से झगड़ा नहीं मचाना
गृह लक्ष्मी गृह चन्द्रिका बन प्रकाश [illegible]
केवल 'मुनि' धर्म जिनवर को भूल कभी [illegible]

'गीत'

तर्ज :—सरोता कहां भूल आये ……

वहनोई सा मोहे प्यारा लागे [illegible]
नाम आपका…… ……[illegible]
नान नान के परम दुलारे [illegible]
[illegible]

औसर मोसर ब्याह शादिमें मनना खर्च करीजो ॥२॥
रंडी बोड़ कभी न जाजो वेश्या मनी नचाजो।
नाटक जुवा सिनेमा छोड़ी वीर ने ध्याजो ॥३॥
खेती करजो गोपाल जी दूध छजोरा रो पीजो।
माँस मदिरा छोड़ बहनोई सा नीति धर्म चित धरजो ॥४॥
धर्म पालजो श्रावक बनजो जीवन सफल बनाजो।
परमार्थ के खातिर अपना जीवन बली चढ़ाजो ॥५॥

(प्रकाशचन्द्र जैन, देशनोक)

'गीत'

तर्ज :—मांजीया धोया थाल परोसिया भात जी···

धोया धोया थाल परोसिया भात जी ॥टेर॥

आवो आवो ज्ञानी रामजी, झट पट घालो हाथ जी।
बांप थारो खरो सुधारक पतिव्रता है माताजी ॥१॥
पढ़िया लिखीया विद्वान हो थे लायक थांकी साथ जी।
उत्तम कुल में जन्म लियो है ऊँची थांकी जातजी ।२।
बेन थांकी सुलक्षमी और ज्ञानी थांका भ्राता जी।
आछा कर कर काम जगमें ऊँची लीजो न्यात जी ॥३॥
बाल विवाह सुदेदा मां है घणो पहुंचाई घात जी।
बूढ़ाने ब्याहसूं जगमें घणा कुंवारा भ्रात जी ॥४॥
मोसर को जीमन खावन सुं बुद्धि सब घट जासी जी।
पंचाके वातांसूं जगमें अबला रूदन मचाय जी ॥५॥

(तेजाराम हीरावत देशनोक)

गीत

नं० २

तज :—आवोरी आवो घन श्याम······

ध्यावोजी ध्यावो महावीर हो बहनोईसा प्यारे ॥टेर॥

सोहो फाटको थे सब छोड़ो,
प्यारे गुरु से प्रीति जोड़ो,
पीवो जी पीवो ज्ञान भंग ·· हो बहनोई ॥१॥

सिगरेट पीनी है दुःख कारी,
जांरा ओगन तो है जारी,
छोड़ोजो छोड़ो सिगरेट ···हो बहनोई ॥२॥

चोपट रमणी नहीं सुहावे,
फालतु टाईम आतो गमावे,
छोड़ो चोपट ने अरू तास ···हो बहनोई ॥३॥

खोटी संगत छोड़ो बहनोई सा,
संतो की सेवा करजो बहनोई सा,
हो जासी जल्दी बेड़ा पार ···हो बहनोई ॥४॥

गीत

तज :—पंछी बावरिया······

सुनों हमारी बात थे प्यारा बहनोई सा ।
तजो फूंट अभिमान थे प्यारा बहनोई सा ॥टेर॥

सुन्दर सुरत मोहन प्यारी मुख चन्द्र की शोभा निराली ।
देखत नैनन धापे थे प्यारा बहनोई सा ॥१॥

मात तात के विनयी पूरे भ्रात बहिन के हो बड़वीरे।
बहिन गले के हार, थे प्यारा बहनोई सा ॥२॥
कुसंगत से बचते रहना, भले जनों की संगत करना।
यही कुलीन आचार थे प्यारा बहनोई सा ॥३॥
परनारी और वेश्या त्यागो, झूठ कपट से दूर भागो।
करो सरल व्यवहार थे प्यारा बहनोई सा ॥४॥
बहिन हमारी एक लाख की, मान बढ़ोवे आप राज की।
सवा लाख का आप थे प्यारा बहनोई सा ॥५॥
चन्द्र चाँदनी जोड़ी मिली है, प्रेम प्यार की क्यारी खिली है।
मिलकर करो सुधार थे प्यारा बहनोई सा ॥६॥
चार भुजा का ब्रह्मा होता, दुनियाँ को जो पावन करता।
आप उन्हीं के लाल थे प्यारा बहनोई सा ॥७॥
बहिन हमारी अति ही प्यारी, पीवर छोड़ी हुई तुम लारी।
रखजो इसका मान थे प्यारा बहनोई सा ॥८॥

गीत

तोरण आयो बना थर थर कांपे राज।
तोरण आयो बनो सासुजी रा प्यारो राज।
मायड़ को जायो बनो भुवा गोद खिलायो राज।
मुख बत्तीसी खिल रही चमके उजीयारो राज।
विद्या को पंडित बनो गुरु कुल को ब्रह्मचारी राज।
उभो अमराव बने सर छोड़े री असवारी राज।

गीत

तर्ज :—बोल्यो रे बोल्यो गालियांरी खातिर बोल्यो…

बोल्यो रे बोल्यो गीतां री खातिर बोल्यो,
ज्ञानवाली रा छेल, फूठरो बोल्यो ।
विद्यावाली रा समय देखने बोल्यो,
अवसर वाली रा, हाँ रे हाँ,
म्हाँरे देश री सेवक हूँ शुभ गीत सनाऊ हूं ।

(तोलाराम हीरावत, देशनोक)

वधावो

तर्ज :—केशरीयालाल कोयल बोले…

मंगल गीतों रो आज गावो वधावो ।
गावो गावो बाबा सारी पोल रंग रसियाराज ॥टेर॥ गावो…
पहले वधावो राज विद्यारो आयो ।
आयो आयो गुरूसां री द्वार, गुण रसियाराज ॥१॥ गावो…
दूजो वधावो राज ज्ञान रो आयो ।
आयो २ ज्ञानजी रे द्वार रंग रसिया राज ॥२॥ गावो
तीजो वधावो राज धर्म रो आयो ।
आयो आयो साधुजी रे द्वार, रङ्ग रसिया राज ॥३॥ गावो…
चोथो वधावो राज विनय रो आयो ।
आयो २ सुसराजी रे द्वार, सुख रसिया राज ॥४॥ गावो…
पञ्चम वधावो राज धीरज रो आयो ।
आयो २ ज्ञान भण्डार श्री नाथराज, गावो वधावो ॥५॥

(तोलाराम हीरावत, देशनोक)

॥ श्री दसारण भद्रराजा का स्तवन ॥

पधारिया वीरजी नंद भारी, दसारण नगरी के वारी।
मुनीश्वर चऊदा सहस वारी, आरज्यां छतीस हजार
दोहा :—समोव सरण देवां रच्यो, सोहे श्री जिनराज
इन्द्रा इन्द्राणी सेवा करतां, पावे हरष अगाज ॥
वीर जी ने वन्दन कुंआया दसारण भद्र बड़े राया।
वीर जी ने ॥टेर॥
वीर जी आप उतरया वागे खवर राजन्द्र भणी लागे
जावणो दरसके काजे। करू सजाई बहु धाजे॥
दोहा :—हाथी घोड़ा रथ पालखी पायदल के परवा
भाई बेटा ऊमराव अँतेवर सबको लीनां लार।
वीर जी ने ॥१॥
आठारा सहस गजराजे घुड़ला लक्ष चौवीस गाजे
इक वीस सहस रथ जोती पालखी एक सहस सोती
दोहा :—गज घुमें घुड़ला हँसे रथ नणे झणकार।
पायदल सनमुख आगे छेई करता जय जय कार
वीर जी ने ॥२॥
पाँच सै अँतेवर लारे सो वनाकर कर सिण गारे।
पेरीया रतन जड़त गहेणाँ बाजना बाजीन्तर घेणा
दोहा :—चँवर छत्र ढांना अनी वाल्या मझँवजार।
ईम आडम्बर आपको राय गरभ्यो मन मुझार।
वीर जी ने ॥३॥

स्वर्ग सु इन्द्र जो आया, बेठा श्री जीनवर के पाया।
ज्ञान सुं वात सर्व जानी। दसारण भद्र वड़ो मानी॥
दोहा :—मान उतारण कारने इन्द्र दियो आदेश।
ऐरावत ऐसी करे ईंको मान गले विशेष।
वीर जी ने ॥४॥
चौंऊँसठ सहस गज छाजे गगन में ऊभाही गाजे।
एका एक वरण वजो आयो सुणता अचरज जो पायो॥
दोहा :—एक एकके मुख पांच से, मुख मुख के आठ दन्त।
दन्त दन्त आठ वावड़ी में आठ कमल में हँत।
वीर जी ने ॥५॥
फाकड़ी लाख जी के। नाटक वतीस वतीस दीखे।
इन्द्र को इन्द्रासन सोहे, करण का ऊपर मनमोहे॥
दोहा :—जणीपर इन्द्र वीराजीया लारे सव परिपार।
दसारण भद्र नरीन्द्र देखने गरभ गयो तत कार।
वीर जी ने ॥६॥
विचारे नृप मनके मांहीं वड़ाई किस विध रहे भाई।
इन्द्र से जीत सकूं नाहीं करूं उपाय कठाताई॥
दोहा :—अवसर ने संजम लियो दसारण भद्र नरीन्द्र।
तुरत आप उतावला पग लागा शकेन्द्र।
वीर जी ने ॥७॥
मुनीसु करजोड़ी वोले, नहीं कोई आपतणे तोले।
और तो शक्ती घणी म्हांरी। ऐसी नहीं एकण लगारी॥

श्री

गुमानी मत करना अभिमान,

एक दिन निकल जायगा प्राण ।

रावण की गया सम्पति देखो जिसन लंकमें ढंढी ।

राम लछमण का लगा झगड़ा,

बिगड़ गई कुलमुंडी ॥१॥ गुमानी… ॥

मामा बालक को कंसने मारा,

मारा गया मथुरा में ।

कृष्ण चाल खेल गया

अब राज मिला गोकुल में ॥२॥ गुमानी ॥

दुर्योधन का कहा नहीं देखो

चार हजार सब हार्यो ।

[illegible]

[illegible] ॥ गुमानी ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] गुमानी

॥ श्री [illegible] महाराज को स्तवन ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आख सतोतर पुरवतांई कुंवर पदे महाराज ।
उट लाख पुरव राज पदवी भोग विया श्री काज । मुगत॥२॥
साठ सहेस वरसां लगतांई दिग चीजे अधिकार ।
अष्ट भगत त्रिदेश अराधी वस कीना सुर भोपाल। मुगत ॥३॥
रतन चतुरदस नवनिध नायक राण्या चौसठ हजार ।
महल चीयालीस भोमी या सरे नाटक नांभणकार । मुगत॥४॥
दोय सहस देवता किया सरे तन तणां रखवाल ।
लाख-चौरासी रथ हय गय वरपायक छन्नुं कोड भूंजार ।
मुगत ॥५॥
आरीसा का भवन में सरें आयो ऊजवल ध्यान ।
अनीत भावना भावतां सरे पाया केवल ज्ञान । मुगत ॥६॥
संजम लेय पधारिया सरे भरी सभाके मांय ।
दस सहस समझाया नृपति ज्ञान पंथ दीखलाय । मुगत ॥७॥
तीजा अङ्कके मांयने सरे चऊ ठाणे अधिकार ।
ऊगी ऊगीने ऊगीया सरे पुन्य तणा फलसार । मुगत ॥८॥
भरत खँडना चक्रवर्त पहेला भरतेश्वर जी नाम ।
ऐसा धनी को ध्यान जो धरता पावे सुख आराम । मुगत ॥९॥
लाख पुरव लग पालियो सरे केवल पद अणगार ।
अणसण कर अष्टा पद ऊपर पहुंचा भवजल पार। मुगत॥१०॥
ऊगणी सो पेंतालीस वरसे रतन पुरी चौमास ।
हीरालाल कहे पुज प्रसादे पुरो मनकी आस । मुगत ॥११॥

'पंखो'

तर्ज…उत्तर दक्षिण सुं पंखी आई कर पंखीरो मोल
रे आ पंखी म्हाँरी,

उत्तर दक्षिण सुं थाँरे नेरे आया
थां सुं म्हाँरे सम्बन्ध रे थे सगी म्हाँरा ॥टेर

थाँरे म्हाँरे घर रो घोग्यो, सनीयो रहे सम्बन्ध रे,
थे सगी म्हाँरा ।

काचो तांतन कदे न टूटे, टूटे न साचो नेह रे,
थे सगी म्हाँरा ।

म्हे थाँरे आवाँ थे म्हाँरे आजो करजो मीठी बात रे,
थे सगी म्हाँरा ।

सम्य पुण्यों में होवे घाट बाट, [illegible] करजो काज रे,
थे सगी म्हाँरा ।

मामे मोटा [illegible] न करजो आप रे,
थे सगी म्हाँरा ।

बाई [illegible] निभाव रे,
थे सगी म्हाँरा ।

[illegible] न गंदा गीत
[illegible] सगी म्हाँरा ।

[illegible] टूटिमियां ओर रे,
[illegible] सगी म्हाँरा ।

आंपा मिलने ज्ञान वढ़ावां, करां सत्य प्रचार रे,
धे सगी म्हाँरा।
(तोलाराम हीरावत)

श्री

या मनखा मोटी घात मरणो जाणणो
मरणो मरणो सारा केवे मरे सभी नरनारी रे।
मरवापेली जो मरजावे तो वलिहारी रे ॥१॥
जीवा सु सगलो जगराजी मरणो मन नहीं भावेरे।
राजा रंक सरीखो सब रे तो पण आवे रे ॥२॥
दूजा भूप डरप मलेछा री कीधी तावे दारी रे।
वीर प्रातप जाण ने मरणो टेक न टाली रे ॥३॥
गुरु गोविंद रो वामणा भूल्यो वालक दो चीणाया रे।
भामा साह घणीयोने धन दे जाता लाया रे ॥४॥
मरवाने वन वीर वीसरीयो धाय याद करलीधो रे।
धोरे चूको यारे साटे जायो जाती की धोरे ॥५॥
मरवा जो जाणे वींसू पाप करम नहीं होवे रे।
सुख दुखरी परवा नहीं राखे प्रभु ने सेवे रे ॥६॥
मरने जब रामने देणो या जी रे मनमें लागी रे।
चतुर चरण धाणरे लागे वो वड़ भागी रे ॥७॥

दोहा :—धन धन सुपहे आपने राख्यो मान अखण्ड,
बार बार गुण गावता सुर गया गगन के मंड ।
वीर जी ने ॥८॥

मुनी संजम जो पाली पधारिया मुगत मुझारी ।
मीठाई जनम मणी फेरी, आतमा अलट हुई जेरी ॥

दोहा :—गरुदेवां प्रसाद से, सुणजो भविगन लोग ।
जो करणी सांची करे, सो मिटे कर्म का रोग ।
वीर जी ने ॥९॥

समत उगणी से साल तेतीसे मन मोहे ।
असोज सुद पंचमी गुण गाया ।
हरख मु. हीरालाल गाया ॥

दोहा —[illegible] ।
[illegible] की लेर ।

॥ श्री [illegible] का स्तवन ॥

[illegible] सुगनीजे ।
[illegible]
[illegible] सुधरीजे ॥जिनन्द
[illegible] अनुग्रह कीजे ॥
[illegible] दे द्वारा॥१॥
[illegible] कीजे । जिनन्द
[illegible] सामी कीजे ।
[illegible] सामी कीजे ॥

जिनन्द जी काज समों कीजे। नाथ जी। मैं द्वार॥२॥
हाजर रहसु बन्दगी करसूं फिर किम नहीं रीझे ॥जि नन्दजी॥
दिल उदार कृतार के लावो। विनती मांनीजे।
विनती मानीजे ॥
जिनन्द जी नाथ जी। मैं द्वार ॥३॥
मेघ सघन घन वरसत समजन। आशा तृपतीजे ॥जिनन्दजी॥
औरांरे पास जाचना करता। वान न सोहीजे ॥जिनन्दजी॥
नाथ जी। मैं द्वार ॥४॥
करुणा सागर करुणानी वाजत, हुक्म कराइजे ॥जिनन्दजी॥
मगन कहे प्रभु वाप गलता की। ओड़नी भाई जे ॥
ओड़नी भाई जे। जी नन्दजी। नाथ जी। मैं द्वार ॥५॥

॥ श्री कीर्त्तिध्वज राजर्षि की ढाल ॥

॥ दोहा ॥

श्री श्री आदि जिनेश्वर, वंश चलावणा भूप।
कुल दीपक प्रभु कुल विषे, भर्तज्ञ वड़ा अनूप ॥१॥
इक्षाकु वंश में ऊपना, भूपति केइ असंख्य।
कीर्त्तिध्वज की वीरता, सुणजो चित्त निशङ्क ॥२।

॥ रस महेलड़ी- ॥

श्री आदि जिनेश्वर कियो पारणां ॥ एदेशी ॥

पृथ्वी भूषण धारीपा मरे कीर्त्तिध्वज को पाट।
आप सर्वंग छे निसरया मरे, मोड़ी कर्म की गांठ
कीर्त्तिध्वज राजा हुआ मुनीश्वर मोट का।
राजा राज करे कीर्त्तिध्वज, मनमें धारे
मार संसार नहीं कर राजकी लगी मं

जिम सूर्य तिम चेतन ऊज्वल, कर्म-राहु तिण लार।
भव मांहि देवे वेदना, धिक धिक यो संसार हो
कीo ॥८॥

मन्त्रीस्वर बुलायने सरे, राज भण्डार संभलाय।
तिलक कियो श्री कुवंर ने सरे, राणी दीवी समझाय हो
कीo ॥९॥

अयोध्या नगरी तणो सरे, छोड़ दियो राज।
कीर्तिध्वज राजा चल्या सरे, करवा आतम काज हो
कीo ॥१०॥

कमल प्रभा राणी तजी सरे, सो कौशल्य सो पूत। -
आप हुआ मुनीश्वर मोटका सरे, किया मुक्तिका सुन हो
कीo ॥११॥

संयम लियो भावसुं सरे कीनो उग्र विहार।
तपस्या मांडी आकरी सरे, मुनीश्वर गुण भण्डार हो
कीo ॥११॥

ज्ञान भणी गुरु कने सरे, हुआ पूर्व का धार।
आज्ञा मांगी एकला सरे, करे देश में विहार हो
कीo ॥१३॥

दिन किना एक आंतरे सरे, आया उण हीज शहर।
मास खमनको पारणो सरे, गों चरियां की वेर हो
कीo ॥१४॥

राणी झरोखे झाकती सरे, बैठी महल मंझार।
मुनिवर आंवता सरे, पूर्व घात चितार हो
कीo ॥१५॥

॥ रस सहेलड़ी- ॥

श्री आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ एदेशी

पृथ्वी भूषन पावीया मरे कीर्त्तिध्वज को पाट।
आप सयंम छे निसरया मरे, तोड़ी कर्म की गांठ हो ॥
कीर्त्तिध्वज राजा हुआ मुनीश्वर मोह का टिर॥१॥
राजा राज करे कीर्त्तिध्वज, मनमें बसे वैराग।
मार संसार नहीं करे राजकी लगी संजम की लाग हे
कीर्त्तिध्वज ॥२
मंत्रीश्वर समझावे निशदिन, बिना हुआ सन्तान।
राजपाट किम चले [illegible] घर जिनका शमशान हे
की० ॥३॥
तुम [illegible] नहीं काम अजाग।
हम [illegible] भोग हो
की० ॥४॥
[illegible]
[illegible] नहीं [illegible] कोई भेद
की० ॥५॥
[illegible] मास।
[illegible] मूल हो
की० ॥६॥
[illegible] चरित्र।
[illegible] कर्म की रीत हो
की० ॥७॥

जिम सूर्य तिम चेतन ऊज्वल, कर्म-राह तिण लार ।
भव मांहि देवे वेदना, धिक्क धिक्क यो संसार हो
की० ॥८॥

मन्त्रीश्वर बुलायने सरे, राज भण्डार संभलाय ।
तिलक कियो श्री कुवंर ने सरे, राणी दीवी समझाय हो
की० ॥६॥

अयोध्या नगरी तणो सरे, छोड़ दियो राज ।
कीर्त्तिध्वज राजा चल्या सरे, करवा आसन काज हो
की० ॥१०॥

कमल प्रभा राणी तजी सरे, सो कौशल्य सो पूत । ·
आप हुआ मुनीश्वर मोटका सरे, किया मुक्तिका सुन हो
की० ॥११॥

संयम लिध्यो भावसुं सरे कीनो उग्र विहार ।
तपस्या मांडी आकरी सरे, मुनीश्वर गुण भण्डार हो
की० ॥११॥

ज्ञान भणी गुरु कने सरे, हुआ पूर्व का धार ।
आज्ञा मांगी एकला सरे, करे देश में विहार हो
की० ॥१३॥

दिन किना एक आंतरे सरे, आया उण हीज शहर ।
मास खमनको पारणो सरे, गो चरियां की वेर हो
की० ॥१४॥

राणी झरोखे झाकती सरे, बैठी महल मंझार ।
मुनिवर आंवता सरे, पूर्व वात चितार हो
की० ॥१५॥

आगे साधु आविया सरे, ले गया मुझ भरतार।
यो भरतार साधु वण आयो सरे, पुत्र ले जासी लार
कौ० ॥१६॥

आय गयो पहिला यन योगी, लेवन आयो पूत।
जो पूत ले जावसी सरे, किसो रहे घरसुनहो
कौ० ॥१७॥

यो नहीं आवे शहर में सरे, सहजे ही टल जाय।
खबर पड़े नहीं राज कुंवरने सरे, आपाके नहीं आय।
कौ० ॥१८॥

हलकारा ने हुकम दियो सर, ये साधु अणगार।
जावो इणाने यों कह दीजो सर मत रहो शहर मंझार
कौ० ॥१९॥

हुकम हुआ राणी जी केरो हलकारा दौड्या चार।
दौड़ आवके गया मुनि का, देखण लगा सार हो
कौ० ॥२०॥

[illegible] मुनि [illegible]।
राजाने ना खबर नहीं [illegible] मुनि के पास हो।
कौ० ॥२१॥

दासी खबर दी [illegible] मुनिवर [illegible] आया।
जिन आवके [illegible] हो
कौ० ॥२२॥

खबर हुई [illegible] जिन कुमार।
वंदना करी [illegible] देखा मुनिके पास हो
कौ० ॥२३॥

हाथ जोड़ के कंवर कहे सरे, क्षमा करो मुनिराज।
मने खबर नहीं इस बात की सरे, माताकी यो अकाज हो
कौ० ॥२४॥
जन्म जराने मरणा मीटाया, दे मुनिवर उपदेश।
वाणी सुन वैरागीया सरे, पेरयो साधुको भेष हो
कौ० ॥२५॥
दो कर जोड़ी कहे कंवर जी, सांभल जो मुनिराय।
इन संसार में राग द्वेष की, लाग रही ते लाय हो
कौ० ॥२६॥
यो संसार समन्द्र भारी, तारो थे मुनिराज।
दीक्षा ले गुरु के पग लाग्या, तरण तारण जहाज हो
कौ० ॥२७॥
खबर हुई राणी भणी सरे, पुत्र लीनो संयम भार।
मोह कर्म की धाकज आई, उठी तनमें झाल हो
कौ० ॥२८॥
पति गयो पहिला मने छोड़ी, पुत्र गयो छै आज।
धिक्क धिक्क मुझ पापणी सरे, मोटो हुयो अकाज हो
कौ० ॥२९॥
इम विचार करती राणी महल सेती छिटकी।
आरत ध्यान के वशमें होकर, कर्म दुर्गति में पटकी हो
कौ० ॥३०॥
हुई यन राजा धर राणी, सिंहणी नाम धरावे।
फिर हुई यनमें रहे रंगमें, जीव मारने खावे हो
कौ० ॥३१॥

आगे साधु आविया मरे, ले गया मुझ भरतार ।
सो भरतार साधु वण आयो मरे, पुत्र ले जासी लार

कीο ॥१६॥

आय गयो पहिला वन योगी, लेवन आयो पूत ।
जो पुत्र ले जावसी मरे, किसो रहे घरसुतहो

कीο ॥१७॥

सो नहीं आवे शहर में मरे, सहजे ही टल जाय ।
खबर पड़े नहीं राज कुंवरने मरे, आपाके नहीं आय हो

कीο ॥१८॥

हलकारा ने हुकम दियो मरे, ये साधु अणगार ।
जावो इणने यों रुक डाजो मत मन रहा शहर संभार

कीο ॥१९॥

हुकम हुआ [illegible] [illegible] हलकार [illegible] ।
[illegible] आय [illegible] [illegible] लगा मार हो

कीο ॥२०॥

[illegible] ।
[illegible] मार हो ।

कीο ॥२१॥

[illegible] आगा ।
[illegible] हरयाया हो

कीο ॥२२॥

[illegible] लिया [illegible] हुलास ।
[illegible] बैठा मुनिके पास हो

कीο ॥२३॥

हाद जोड़ के कंवर कहे सरे, क्षमा करो मुनिराज।
मने खबर नहीं इस वात की सरे, माताकी यो अकाज हो
की० ॥२४॥
जन्म जराने मरणा मीटाया, दे मुनिवर उपदेश।
वाणी सुन वैरागीया सरे, पेरयो साधुको भेष हो
की० ॥२५॥
दो कर जोड़ी कहे कंवर जी, सांभल जो मुनिराय।
इन संसार में राग द्वेष की, लाग रही ते लाय हो
की० ॥२६॥
यो संसार समन्द्र भारी, तारो थे मुनिराज।
दीक्षा ले गुरु के पग लाग्या, तरण तारण जहाज हो
की० ॥२७॥
खबर हुई राणी भणी सरे. पुत्र लीनो संयम भार।
मोह कर्म की धाकज आई, उठी तनमें झाल हो
की० ॥२८॥
पति गयो पहिला मने छोड़ी, पुत्र गयो छै आज।
धिक धिक मुझ पापणी सरे, मोटो हुयो अकाज हो
की० ॥२९॥
इम विचार करती राणी महल सेती छिटकी।
आरत ध्यान के वशमें होकर, कर्म दुर्गति में पटकी हो
की० ॥३०
हुई घन राजा घर राणी, सिंहणी नाम धरावे।
फिर हुई वनमें रहे रंगमें, जीव मारने खावे हो
की० ॥३१॥

अब मुनिवर की सुनो वारता, वे गुरु चेला दोही ।
संयम पाले दोषण टाले, ज्ञान गुणाकर मोही हो
की० ॥३३॥
भूमंडल में विहार करता, करता ज्ञान अभ्यास ।
चित्रकोट गढ़ उपरे मरे, आप कियो चौमास हो
की० ॥३४॥
मास खामण पारणे मरे, गोचरिया सिधाय ।
तीजा प्रहरके वक्त में मरे, मुनिवर मारग जाय हो
की० ॥३४॥
ईर्या पथ जोतां थकां मरे, गज हाथी की चाल ।
झोली पातरा आगा मंडपनी, मुनि समता में लाल हो
की० ॥३५॥
[illegible] विकराल ।
[illegible] आप [illegible] मुनिका आहार हो
की० ॥३६॥
[illegible] पान ।
[illegible] राम हो
की० ॥३७॥
[illegible] ॥ढाल॥
[illegible] परक माय ।
[illegible] जहां थाय हो
सुन ॥३८॥

कहे चेला जी सुणों गुरुजी एक करूं अरदास ।
सारूं कारज आप देखतां करूं कर्म को नाश हो ॥
गुरुजी म्हारा आज्ञा देवो तो आगे चलांसु । टेर॥३९॥
दो म्हाँने खरची अमरापद की, जन्म जन्म सुख पाऊं ॥
सुख सासता सिद्ध पुरी का, गरभावास नहीं आऊँ हो
॥ गुरु ॥४०॥
तुं बालक नानडियो म्हांरो, कोमल काया धारी ।
यो परी सोह घणो दोहिलो, मान कहण तू म्हारी रे
॥ सुन ॥४१॥
दुक्कर दुक्कर घणोज दुक्कर, तेमां दुक्कर कारी ।
मने सहनदे मान लेस तु घणो परिसह भारी रे
॥ सुन ॥४२॥
या वेला छे दोहिली सरे, रहणो ध्यान अडोल ।
संयम पालो सुख में रहो सरे, मानो हमारो बोल रे
॥ सुन ॥४३॥
थे गुरु दाता ज्ञान का सरे, तरण तारण जहाज ।
म्हांरे थंठां आप दुख पावो घनी आये मुझ लाज हो
॥ गुरु ॥४४॥
हाथ जोड़ने कहे कुंवरजी मैं सूरो राजपून हो ।
जन्म लियो घर आप के सरे, सिंहनी जायो पूत हो
॥ गुरु ॥४५॥
भांत भांत करने समझायो, चेलो न मानी एक ।
सूर क्षत्री रण में चढ़े सरे पावे हर्ष विशेष हो
॥ गुरु ॥४६॥

आलोइ निंदी निःशल्य थइने, अणसण कीधो सार।
भाख्या तिपनी सामे मुनीश्वर, गुरु देखे वारं वार हो
॥ गुरु ॥४७॥

उठी पापनी मारी थापकी, कोमल काया हारी।
नाक शब्द नहीं थाप्यो मुनीश्वर, समता चित विचारी
॥ गुरु ॥४८॥

भार भारने न्यायण लागी, ष्वण्ड ष्वण्ड कियो शरीर।
नमां झाली जब लागी तुटवा, त्यांही पड़े जिम नीर हे
॥ गुरु ॥४९॥

क्षपक श्रेणी [illegible] मुनीश्वर [illegible] ध्यान जब ध्यायो।
[illegible] कर्म [illegible], [illegible] ज्ञान [illegible] पायो हो
[illegible] ॥५०॥

[illegible] कर्म का नाश हे
[illegible] मुक्ति में वास हे
॥ गुरु ॥५१॥

[illegible] रत्न।
[illegible] हो
की० ॥५२॥

[illegible] रम्या दुर्गी।
[illegible] दुर्गी हो
की० ॥५३॥

[illegible] ध्यान।
[illegible] ध्यान हो
की० ॥५४॥

कहे मुनीश्वर सुणे वाघणो धिक्क थारो जम्मार ।
पुत्र विणास्यो आज आपणो, सो कौशल्य कँवार हो ॥५५॥
धिक्क २ घणा हो जो, पुत्रर मार्यो थे पापणी ॥टेर॥
जिनके कारण महलां सेती, पड़के कीधो काल ।
उन्हीं पुत्र को हाथ से मारी, करवा लागी अहार हो
धिक्क ॥५६॥
सुणी वचन मुनीश्वर केरा, घट में पड़ियो भर्म ।
वली विचार कियो मन मांही, कोण बोले इम मर्म हो
धिक्क ॥५७॥
इहांथी वलि अंत समय में, करता तिणावार ।
जातिस्मरण ज्ञान उपनो, जाण्यो सकल विचार हो
धिक्क ॥५८॥
कीर्त्तिध्वज राजा था म्हांरा, सो कौशल्य थो पूत ।
मैं राणी हुंनी राजा की, कमल प्रभा संयुक्त हो
धिक्क ॥५९॥
मवे छोड़ने संयम लीधो, दुःख मैं पाई भारी ।
पुत्र वियोगे मरणो मांही, कीनो जान ख्वारी हो
धिक्क ॥६०॥
छिटक महल से पड़ो मैं हेठे, कर्म तणी गत भारी ।
तिहां थी मुई यहां उपनी, सिंह तणे घर नारी हो
धिक्क ॥६१॥
थोही पुत्तर पाने पड़ियो, ते मैं मार्यो आज ।
धिक्क २ मैं पापणी सरे, मोटो कियो अकाज रो
धिक्क ॥६२॥

इणी पापसुं कैम छुटसुं, जन्म के माय।
पुत्र हत्या में करी हाथसे, लघु पण मुनिराय हो
धिक्क ॥६३॥
अब जीवणो युक्त नहीं मरे, अणसन करनो सार।
पाप आलोऊं पाछला सरे, जिम उतरूं भवपार हो
धिक्क ॥६४॥
आत्म ने धिक्कारज देती, गई वन के मांय।
चढ़ता भाव धरी ने सिंहणी, दियो संथारो ठाय हो
धिक्क ॥६५॥
दिन किता एक में सीज्यो संथारो, काल समे करी व
हुई देवता स्वर्ग आठमे, देव लोक सहस्रार हो
धिक्क ॥६६॥
कीर्त्तिध्वज राजा गुरु पासे, आत्मा ने सुधारी।
घणा जणा पे उपकार करीने जन मार्ग उजाला हो
की० ॥६७॥
अन्त समय अणसण आराधी, पाम्या केवल ज्ञान
अष्ट कर्म को अन्त करीने, हुवा सिद्ध भगवान हो
की० ॥६८॥
इम अनेक हुआ मुनीश्वर, एक एक थी अधिका।
कष्ट पड्यां कायम रहाने दिया मुक्ति में ठेका हो
की० ॥६९॥
गज सुकमाल हुआ मुनीश्वर, धरो शीश पर आग।
सोमल ऊपर कोप न कीधो मुक्ति गया महाभाग हो
की० ॥७०॥

पील्या शिष्य पांचसो मुनिका खंधक खाल उतारी।
औरही घना हुआ मुनीश्वर कहुं कहां लग जहाँरी हो
कीं० ॥७१॥

गुरु श्री रत्नचन्दजी सरे, ज्ञान तणा दातार।
जवाहरलाल जी मोटा मुनीश्वर, गुण तणा भंडार हो
कीं० ॥७२॥

उन्नीसे इकनीस में सरे, उदयपुर चोमास।
हीरालाल यों करे विनति, गुरु चरणका दास हो
कीं० ॥७३॥

कीर्त्तिध्वज सो कोशल्य मुनिकी, ढाल करी एक मन हो।
कीर्त्तिध्वज राजा हुआ मुनीश्वर मोटका ॥७४॥

इति —

॥ श्री श्रावकरी सज्झाय ॥

श्रावक तुं उठे परभात, चार घडी ले पाछली रात॥
मन में समरे श्री नवकार, ज्युं पामे भवसागर पार ॥१॥
कवण देश कवण गुरु धरम कवण हमारे छे कुल करम॥
कवण हमारे छे विन साथ एहवो चिंतवजे मनमाय ॥२॥
सामायिक लेजे मन सुध, धरम तणी हिये धरिजे वुध ॥
प्रतिकमणो कर रहे निननो, पातीक आलोये आपणो ॥३॥
काया सगति करे पचखाण, सुधी पाले जिनवर नी आण॥
भणजे गुणजे स्तवन सजाय, जिणहंती निसतारो थाय ॥४॥

विचारे नित पचदे नेम, पालेजीव दया ते सीम ॥
गुरुने मुल लिजे आलड़ी धरम न मेले एका घड़ी ॥१
याह सुध करजे उपगार, आच्छा अधिक रो परिहार ॥
मनमरे कुड़ो कहेनी साच कुड़ा सु सकधन मन भाप
परभाते उठ गुरु वांदणजाय, सुणो वखाण सदासुखे चितला
निर दूषण सूजतो आहर, साधुने देजे सुविचार ॥
सामी वछल करजे घणो, मग पण मोटो सामीतणो ॥
दुःखीया हीना देख, करजे तास दया सुविशेष ॥
घर अनुसारा दिजे दान, मोटासुं मतकरे अभिमान ॥
अनन्त काय कहिये बत्तीस, अभक्षया बीसे बीजाया बीस
केवलिया भाख्या छे इसे, काचा कवला फल मत जीमें
छाणा ईंधण [illegible] जोय जोया विना ने पापज होय ॥१
घारन [illegible] पर घारजे नोर अणगल नीरन धोवे चीर ॥
वार व्रत सुधा पालजे अतिचार सगला टालजे ॥१
कहया पनरे करमा दान पापतणा परिहरजे त्याण ॥
रात्रि भोजन मां बहु दोष जाणीन करजे संतोष ॥१
मारु माटी [illegible] गुन्दी, मरु [illegible] मनयेंगे वाली ॥
[illegible] पन [illegible] पाप घणा कहया के मास ॥१
पाना [illegible] थे थे घार अणगल घरमा दोष अपार ॥
[illegible] मा करजे जतन पातिक टाली करजे पुण्य ॥१
[illegible] मुख दिये गमजे, बोल विचारी ने आलजे ॥
[illegible] दाम [illegible] चित्त, पर उपगार करे सुमचित ॥१

तेल तकर घृत दुधने दही, ऊघाड़ा मत मेलेसही ॥
पांचे तिथ न कर आरम्भ पाले शील तजे मनदंभ ॥१६॥
दिवस तनो आलोय पाप, जिम मांगे सगलो संताप ॥
आठूं करम पातला, भव भव ना भाजे आमला ॥१७॥
बारू लहिये अमर विमाण, जिम पाओ शिवपुरनो थ.न ॥
किरत हरष कहे सनेह, श्रावकनी करणी वे एह ॥१८॥

॥ श्री सातवारों का स्तवन ॥

अदीतवार ने दिन भोली दुनिया, मिनख जमारो पायजी ।
छव कायारा आरम्भ करता, गयो जमारो हारजी ॥
सुणो भवियण महाबीरजी री वाणी,
सत्त पुरपारी अमृत वाणी ॥१॥
सोमवार ने सुता मूरख, मनमतवाली निंदजी ।
काल सीराणे आण खड़ो, जिम तोरण आयो वींदजी ॥
सुणो० ॥२॥
मंगलवार ने मंगलाचार, दया धरम सुप्रेमजी ।
सामायक पाडिकमणो करतां, लाहो ल्यो नित नेमजी ॥
सुणो० ॥३॥
वुधवार ने पली अवस्था, वुढ़ापो दुःख दायजी ।
बैठे खाट पोलके उपरे, पड़ियो करे विलापजी ॥
सुणो० ॥४॥

बिसपतवार ने विजोग पड़ियो, कोई न मेटण हारजी
मात पितारी करो बंदगी, जिम उतरो भवपार जी ॥
सुणो० ॥५॥

शुक्रवार ने शुक्राचार, जासी शिवपुर माय जी
अनन्त सुखामें घेरो दियो, उपारो होजासी गेवो पार
सुणो० ॥६॥

थावरवार ने थिरता हासी, हूं धनवंती नार जी ।
सेर सेर सोनो पेरती मोत्या भरती माल जी ॥
सुणो० ॥७॥

ए सातुंवार सदा नितरीजे आ सत गुरु की सिख
ए सातवार नित नित सिवरिया दूजा नी देवो पार
सुणो० ॥८॥

॥ उपदेशी फटका ॥

[illegible]
[illegible] ॥१॥
[illegible] दियो उंसे,
[illegible] ॥२॥
[illegible] अचिरज
[illegible] ॥३॥
[illegible]
[illegible] ॥४॥

रुपक का ख्याल राग आनुरागे,
धक्का खाय तो ही धसे आगे ॥ धि० ॥५॥
नाटकमें उभा रहे रात सारी,
मुनि दरशन आलस अति भारी ॥ धि० ॥६॥
तप जप वात में पट नट जावे,
खाणे में लोटो लेई भट जावे ॥ धि० ॥७॥
स्तवन सभाय कहेतां शरमावे,
लड़ना तो कछुदाय न आवे ॥ धि० ॥८॥
दान देतां थर थर कर धुजे,
हिंसा करण में कर अति जूझे ॥ धि० ॥९॥
लोभ कारण करेअति नर नाई,
साहम्मी सुं करे गुमराई ॥ धि० ॥१०॥
पाप करणी में मन उल्ल सावे,
धर्म क्रियामें न चित लगावे ॥ धि० ॥११॥
क्रोध मान तृष्णा वल भारी,
दान शीयल तप भाव भिखारी ॥ धि० ॥१२॥
पाप करण में जोर जणावे,
धर्म उद्यम मांहि कायर थावे ॥ धि० ॥१३॥
परख नहीं देव गुरु धर्म केरी,
विणज में दृष्टि पहोंचावे घणेरी ॥ धि० ॥१४॥
जीव दयाने खरखना रोवे,
जस सोना में निर्थक धन खोवे ॥ धि० ॥१५॥

निंदा विकथा में निशि दिन रातो,
गुणि जनका गुण सुणी अकुलातो ॥ धि० ॥१६॥
कर्म मन्थन की शिक्ष सुनिराजी,
धर्म शिक्षा सुणि अधिक नराजी ॥ धि० ॥१७॥
पापी कुं आदर देके बिठावे,
धर्मीकुं देख अधिक घुरावे ॥ धि० ॥१८॥
पाप को परचो दया थकी दूरो.
धर्म में पाछो कर्म माहीं शूरो ॥ धि० ॥१९॥
पर दुःख देखीने अति हरषावे,
निज सपत्त से अधिक पोमावे ॥ धि० ॥२०॥
बबुल बोय आम फल चहावे,
विष भक्षण करि जीवणा चहावे ॥ धि० ॥२१॥
पच पच खोय दियो भव सारो,
तेलका थैलज्युं हारयो जमारो॥ धि० ॥२२॥
निश दिन हाय हाय धन धन की,
लाज नहि परभव गुरु जन की ॥ धि० ॥२३॥
धोबी का स्वान ज्युं कहे धन मेरो,
सोचे न छेवट नरक मे डेरो ॥ धि० ॥२४॥
यहां अपयश आगे दुःख भारी,
धर्म बिना भव भवमें खुवारी ॥ धि० ॥२५॥
जैसा जाया तैसा सिधाया,
धिक जननी जिणो गोद खिलाया ॥ धि० ॥२६॥

उगणिसें अटतिस महावदि जाणो,
चोथ तिथि रविवार वखाणो ॥ थि० ॥२७॥
तिलोक रिख कहे अवाल कोटी मांहि,
इम सुनि करजो थे कर्म कमाई ॥ थि० ॥२८॥

॥ श्री उपदेशी फटको दुजो ॥

धनतेरा जीवडा, नित करता धरम कुं ॥
धन तेरा तन मन, धनहै जनम कुं ॥१॥
रत्न चिन्ता मणि नरभव पाई,
धर्म चिन्ता मणि ले उलसाई ॥२॥
मिथ्यात्वी नरकुं नहिं सरसावे,
धर्मी कुँ देख अधिक हरषावे ॥३॥
धर्म कथा सुनवा चित चहावे,
सुण कर सारग्रही उलसावे ॥४॥
तप जप किरियामें रहे अगवानी,
पुदगल पर कपहूँ ममता न आणी ॥५॥
ख्याल नाटक में कवहुं न जावे,
मुनिदरशण आलस नाहि आवे ॥६॥
प्रभु गुण गावता अधिक गुंजावे,
क्रोध कलेश थकी शरमावे ॥७॥
दान देवे नित उलट परिणामें,

पापका काम में डर अनि आणो,
धर्म को काम सदा भलो जाणो ॥९॥
क्रोध मान तृष्णा वल त्यागे,
दान शीयल तप भावमें आगे ॥१०॥
सत्य पक्षकी प्रतीत जो आणे,
झूठ को पक्षरति नहीं टाणे ॥११॥
जीव दया धन खरचण जाणो,
लाभ अनंत हिये इम ठाणो ॥१२॥
न करे निन्दा विकथा सुणे नाई,
गुणि जनना गुण सुणि उलासाई ॥१३॥
कर्म बन्धन की शोक न धारे,
धर्म शिक्षा सुखदायी विचारे ॥१४॥
पापीमु प्रीति न राखे कदाई,
धर्मी कुं आदर दे अधिकाई ॥१५॥
धरम मु परचो पाप थी डरे,
कर्म में पाछो सो तप जप सूरो ॥१६॥
पर दुःख देखि अणुकम्पा घणेरी,
मगरूरी करे नहीं निज सुख केरी ॥१७॥
आम को बोय आम फल चाहावे,
ऐसे गुणामो कदिन ठगावे ॥१८॥
रात्रि दिन वछना धर्म मरम की,
लाज घणी परभव गुरु जनकी ॥१९॥

धन कुटुम्ब तन नहीं जाणे मेरो,
जाणे जैन धर्म सहायक तेरो ॥२०॥
इन भव शोभा आगे सुख भारी,
कर्म शत्रु हणीवरे शिवनारी ॥२१॥
नरभव पाय के धर्म कमाया,
धनजननी जिणे गोद खिलाया ॥२२॥
तिलोकरिख कहे उपदेशो,
इम सुणि कर जो थे धर्म हमेशो ॥२३॥

—o—

॥ श्री चौविश जिनवर का स्तवन ॥

प्रातः उठी चोविश जिनवर को
समरण कीजे भाव धरी ॥प्रा०॥
ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन,
सुमति कुमति सब दूर हरी ॥
पद्म सुपास चन्दा प्रभु ध्यायो,
पुष्प दंत हणया कर्म अरि ॥प्रा० १॥
शीतल जिन श्रेयांस वासु पूज्य,
निर्मल विमल बुद्धि देतखरी ॥
अनंत धर्म श्री शान्ति जिनेश्वर,
हरियो रोग असाध्य मरी ॥प्रा० २॥
कुंथु अरह मल्लि मुनि सुव्रतजी,
नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥

पारस नाथ वर्द्धमान जिनेश्वर,
केवल लह्यो भव आपे तरी ॥प्रा० ३॥
तुम सम नहिं कोई तारक दूजो,
इम निश्चे मन मांहि धरी ॥
तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने,
मुक्त लीध्यो प्रभु महर करी ॥प्रा० ४॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा ॥ ए देशी ॥
जै जिणंद जै जिणंद जै जिणंद देवा, उठि प्रभात समरनाथ,
श्री ऋषभ देवा ॥ टेर ॥
पिता तेरो नाभि राज, जननी है मरुदेवा ।
देही कंचन वृषभ लंछन, तेजों रविपति जेहवा ॥ जै० १॥
जुगलाधर्म निवार कियो प्रभु, छे कुल गरकी ठेवा ॥
संजम लीधो श्री जिन आठे कर्म अरि ने हणेवा ॥ जै० २॥
केवल ले प्रभु देशना दीधी, वाणी ज्युं अमृत मेवा ॥
चार तीरथकी स्थापना कीनी, भवजल पार करेवा ॥ जै० ३॥
दस सहस्र मुनि संगे अष्टापद, चढीया अणसण लेवा ॥
छ दिन संथारे मुक्ति विराज्या, सुखि अनन्त नितमेवा॥जै०४
तिलोकरिख कहे में तुम चाकर, छूं चरणारज सेवा ॥
जिम तिम करि भवपार उतारो, दिजो अविचल रेवा॥जै०५॥

॥ श्री चोविस जिनवर की स्तुति ॥

राग बसन्त ॥ शांति चरणकी जाउं वलिहारी ॥शा० ॥ए देशी॥
झेलो वंदणा नाथ हमारी, तुमारे चरण की वलिहारी ॥
॥ ए देशी ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुखकारी ॥
श्री सुपार्श्व चंदा प्रभु समरो, जगनायक जस धारी ।
प्रभु जी पूरण उपगारी ॥ झे० १ ॥
सुविधि शीतल श्रेयांस वासु पूज्य,
विमल अनन्त धर्मधारी ॥
शांति जिनन्द सुखकंद जगतमें, मेट दीनी सयमारी,
हरो मेरी विपत बिमारी ॥ झे० २ ॥
कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी सुविचारी ॥
तोरण सें पाछा फिर आया, वो छोड़के राजदुलारी,
नाथ तुम करुणा भडारी ॥ झे० ३ ॥
ये वारस के वारस पारस, पच परमेष्टी उचारी ॥
नागनागणि जलत बचाया, कीना सुर अवतारी,
महिमा जगमें अति धारी ॥ झे० ४ ॥
शासन नायक वीर जिनेश्वर, दृढ़ क्षमा प्रभु धारी ॥
केवल ले प्रभु धर्म बतायो, सूत्र चरित्र सारी,
तीरथ थाप्यां प्रभुचारी ॥ झे० ५ ॥
अणसण लेई प्रभु जोग त्याग कर, पहुंचा है मुक्ति मंझारी ॥

अनन्त सुख मांही जाय विराज्या तो, नरिंजन नीराक
रह्या लोका लोक निहारी ॥ शे० ६ ॥
मोह माया मांहि उलभ रह्यो में, पायो हुं दुःख अपारी
तुम शरण विन चउगति भटक्यो, धर्म की बुद्धि विसा
शीख सतगुरु की न धारी ॥ शे० ७ ॥
अशुभ कर्म कछु दूर भयासु, वाणी लगी प्रभुप्यारी ॥
आतम उद्धारण विरुद सुणिने, शरणो लियो सुविचारी,
सार करजो प्रभु हमारी ॥ शे० ८ ॥
मुझ सरिखो नहि दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी।
जिम तिम करि भवपार उतारो, या मांगु रिझवारी,
अरज लीजो अवधारी ॥ शे० ९ ॥
उगनीसे अडतीश माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथी शनिवा
देश दक्षिण आवल कोटि पठेमें जोड करी हितकारी,
तिलोक रिख कहे सुविचारी ॥ शे० १० ॥

॥ श्री वीस विहर मानकी लावणी ॥

दीन दयाल कृपाल, करुणा भण्डारी ॥ क० ॥
जय विहर मान जिनवीश, धर्म अधिकारी ॥
श्री सी मंधर स्वामि, सदा सुखकारी ॥ स० ॥
जय युग्मंधर जसवंत, चरण बलिहारी ॥
बाहु जिणंद कृपाल, करुणा भण्डारी ॥ क० ॥

श्री सुवाहु जगदीश, परम पद धारी ॥
सुजान प्रभु घनघाती, कर्म कीयां छारी ॥ क० ॥
स्वयं प्रभु वीतराग, ममता विडारी ॥
ऋषभानन्द आनन्द, करे नर नारी ॥ क० ॥
जय विहरमान महाराज, धर्म अधिकारी ॥ ए टेर ॥१॥
अनन्त वीरज जगनाथ, लज्या जगनाता ॥ त० ॥
श्री सूर प्रभु सुविख्यात, करो सुख शाता ॥
विशाल प्रभु सुविशाल, त्रिजगकु त्राता ॥ त्रि० ॥
श्री वजरंग धर नव वज्र कर्न के घाता ॥
चन्द्रानव सुखकंद दर्श चिन चाता ॥ द० ॥
चन्द्रवाहु कमराहु, हठा या खाता ॥
कियो कर्म से जंग भुजंग प्रभु भारो ॥ भु० ज० ॥२॥
ईश्वर त्रिजग ईश. मेरे मन भावे ॥ मे० ॥
श्री नेमीश्वर जिन ध्यान करतां दुःख जावे ॥
वीरसेन करे केण अमर पद पावे ।
महाभद्र करे भद्र विघन कुँ हटावे ॥
देव जश करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥
अजीत वीरज निजपद. देत भज भावे ॥
जघन्य पदे वर्तमान, जिनद उपगारी ॥ जि० ज० ॥३॥
मनुष्य पांचसों प्रमाण, प्रभुजी की काया ॥ प्र० ॥
लक्ष चोराशी पूरव आयु फरमाया ॥
थाप्या हे तीरथ चार भविक मनभाया ॥ भ० ॥

होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥
मैं अधम उद्धारण विरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥
त्रिलोक तिलक तुं जाण, शरणागत आया ।
जिम तिम करो भवपार, अरज अवधारी ॥ अ० ज० ॥४॥

॥ श्री सोले स्वप्ना की लावणी ॥

दोहा—शासन नायक सुरतरू, भयभंजन भगवंत ॥
त्रिशलानन्द जिनंद मम, प्रणमूं मन धरिखंत ॥१॥
वली प्रणमुं गौतम गुरु, तप संजम दातार ॥
तास प्रसादे वर्णवुं, सुपन सोले अधिकार ॥२॥
पाडलिपुर नगरि विषे, चन्द्रगुप्त राजिंद ।
बार व्रत धारक गुणी, परजा ने सुख कन्द ॥३॥
चउद पूरव ज्ञान शुद्ध, भद्रबाहु मुनिराज ॥
समो सरया उद्यानमें, तारण तरण जिहाज ॥४॥
पाछली रातने विषे, देख्यां स्वपना सोल ॥
वंदे नृप करजोड़िने, अर्थ कहो मुनिलोल ॥५॥
अगड़दम अगड़दम बाजे नौबाजा ॥ ए देशी ॥
कल्पवृक्ष की शाखा टूटी, अर्थ सुणो इन स्वप्नों का) ॥
अबसें राजा होयगा कोई, संजम वो नहीं लेनेका ॥
दूजे अस्त भया सूर्य अकाले, अंदसुणो अब इसका सही ॥
पंचमें आरे जन्म लिया है, उनकूँ केवल ज्ञान नहीं ॥
तीजे चन्द्रमा अर्ध दृश्य, ए अन्धकार भया भारी ॥

भद्रबाहु मुनि कहे भूपनुं, पांचमो आरो दुःखकारी ॥१॥
चांद देखा तुम चालणी जैसा, तिसरे सपना के मांई ॥
अलग अलग समचारी होयगी, बोल फरक कुछ दरसाई ॥
भूत भूतणी नाचत हिल मिल, देखा चौथे सुपना मांई ॥
देव गुरु धर्म खोटा जिनकुं, लोक मानेगा अधिकाई ॥
दया धर्मपर बहोत जलेंगे थोड़े जैन धरम धारी ॥भ०॥२॥
पांचमें देख्या सर्प भयंकर, धारे फणकर फूंकारे ॥
कितेक साल पिछे काल पड़ेगा, बारे बरस लग भयंकारे ॥
उत्तम साधु कर संथारा, आतम कारज सारेगा ॥
कायर साधु सो ढीले पड़ेंगे, हिंसा धर्म विस्तारेगा ॥
छोटा दे उपदेश लोकोंकु, होवेगा कोई घरबारी ॥भ०॥३॥
छठे स्वप्ने देव विमाणकुं, आता सो देख्या फिरता ॥
जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद दिल अन्दर आणी थिरता ॥
जंघा चारण लब्धि धारक, और विद्याचारण जाणो ॥
ए दो लब्धि के है धारक, एसे मुनिवर की हाणो ॥
वैक्रिय और अहारिक की लब्धि, एवी विच्छेदेगा सारी
॥भ०॥४॥
विकसा कमल उकरडी ऊपर, जिसका भेद सुनो भाई ॥
चारवर्ण में महाजन के घर धरम रहेगा अधिकाई ॥
सास्त्र की रुचि रहेगी थोडी, सुणतां निद्रा लेवेगा ॥
स्तवन सज्झाय और ढाल चौपाई, जिसमें बहुत खुश रहेगा ॥
प्रति बोध पिण इसमें पाके, होवेगा संयम धारी ॥भ०॥५॥

आग्या का चमत्कार आठमें, भेद सुनो इसका नीका
उद्योत होयगा जैन धरम का, बाकी मिथ्यातम है फी
समुदर सुको तीन दिशापर दक्षिण दिश डोलो पाणं
दक्षिण दिशापर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगी हाणं
पंच कल्याणिक भये जिणा पुरमें, धरम हानि जहाँ उ
॥भ०॥६॥

दशमें सोनेकी थाली जिममें कुत्ता देखो खीर खाता।
उत्तम कुलकी दौलत है सो जावेगी मध्यम हाता ॥
नटखट सोदा चोर ठगारा, धूरत होयगा धन वाला ॥
साहुकार सो भूरेगा दिलमें, कहे न शाके मनकी ज्वार
धन संपत सज्जन की हाणी, मत्यवादी कम नर ना
॥भ०॥७॥

हस्ती ऊपर इग्यारमें स्वपने, देखा बंदर कु बैठा ॥
नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हे
बारमे स्वपने देखा तुमने, दरि ने मरजादा छोड़ी।।
बेटा बेटी मात पिता की मरजादा रखे थोड़ी ॥
बहु सासु का न करेगी कहेणा उल्टी दुःख देशी भा
॥भ०॥८॥

लांच ग्राही सो क्षत्री होयगा, वचन देके नट जावेगा
ठगाईदार विश्वास वानि नर , सच्चे नरकुं हटावेगा।
भला सक्रम का आदर कमती, पापी आदर पावेगा।
गुरु गुराणी की चेला चेली, सेवा भक्ति कम चहावेगा।

आपनी बड़ाई करेगा मुखसे, गुरुकुं होयगा दुःख कारी
॥भ०॥९॥

जोत्या देखी स्वपने तेरमें, बालक के महारथ मांहि ॥
नादान उमरके धरम करेगा, संजम लेगा उलसाई ॥
लज्जासुं तप संजम पाली, तपजप में चित देवेगा ॥
बुढ़ा ढिला होयगा धर्म में आलस अधिको रहेवेगा ॥
सरधा नहि सब लड़का बुढ़ा, समुच्चय भाव कथा जहारी
॥भ०॥१०॥

रत्न की कांति मंदी देखी चउदमा स्वपनामें जाणो ॥
भरत क्षेत्र का संत साधके, हेत इकलास थोडो मानो ॥
क्रोधी क्लेशी अरु अभिमानी, अपनी धाक जमावेगा ॥
भली सीख जो देगा कोई, उसका औगुण बनावेगा ॥
अल्प होयगा संजमवंता, होयगा बहुतसा लिंगधारी
॥भ०॥११॥

राज कुंवर सो चढ्या पोठिपर, देखा स्वपने पंद्रमें ॥
राजा जैन धरम तजदेगा, राचेगा मिथ्या करमें ॥
बातकरे जो सच्च वटकी उसकी थोड़ा मानेगा ॥
झूटे की परतीत करेगा, खोटे का पक्ष तानेगा ॥
धर्मी पुरुष की करेगा ठठा, पापी का आदर भारी
॥भ०॥१२॥

लड़ते हस्ती देखे सोलमे, विन मानव आपस मांहि ॥
बार बार दुष्काल पड़ेगा, मन चहाया वर्षेगा नाहि ॥

मात पिता गुरु पासके करतां, विच विच बात करेगा बेटा
भाई भाई में संपत ओछी, बोलेगा निर्थक खोटा ॥
पिता पक्ष को आदर ओछो, त्रिया पक्ष सुं करेगा यारी
॥म०॥१३॥

काया दाबला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोड़ा होवेगा
झगड़ा टंटा निरर्थक करके, राज माहीं धन खोवेगा ॥
केण न माने भला मरम को, फिर पीछे पछतावेगा।
एक विश हजार बरस लग राजिंद, ऐसा रीति करजावेगा
अरथ सुणी सोले स्वपना, राज भया दृढ़ व्रतधारी
॥म०॥१४॥

संमत उगणीशें साल सेंतीसका, फागण वदि इग्यारस उ
तिलोक रिख कहे स्तवन लावणी, ग्राम कडामें बणाई।
संयम आगे दुःखम नामें [illegible] है इणमें अधिकाई ॥
धरम ध्यान और समता राखे, उनके सुख समजो भाई
ऐसी जानके करना सुकृत, उतरोगे भवजल पारी ॥१५

॥ श्री विजय सेठ विजिया सेठानी का स्तवन

शुक्ल पक्ष विजिया व्रत लीनो ॥
सेठ कृष्ण पक्ष जाणी ॥
[illegible] श्रावक [illegible] विजय सेठने सेठाणी ॥
[illegible] का [illegible] सिणगार सजी तन,

दाम घटा जिम उल्गाणी ॥
सज सिणगार चढी पिउ मंदिर हेज घणो हिय हरषाणी
॥ ध० ॥ १ ॥
तीन दिवस सुव्रत तणा छे, सेठ बोले मधुरी वाणी ॥
वचन सुणी नेणा नीर ढलीयो वदन कमल गयो विल्माणी
॥ ध० ॥ २ ॥
पूछे प्रीतम सुन सुख हेणी, कुण चिंता मनमें आणी ॥
शुक्ल पक्ष गुरु सुख व्रत लीनो तुमे परणो बीजी स्याणी
॥ ध० ॥ ३ ॥
अवर नार सुता बहन बराबर, धन धीरज धारी आणी ॥
एकज सेज्या हेज अपर बल, तो पिण मन राख्यो ताणी
॥ ध० ॥ ४ ॥
वर्षा काल बीजल घन गाजे, बहधारा बरसे पाणी ॥
खट ऋतु बरस द्वादश निरमल, शील पाल्यो जो
समता आणी ॥ ध० ॥ ५ ॥
विमल केवली करी प्रशंसा, ए दोनु उत्तम प्राणी।
खबर हुई संजम व्रत लीनो, मोह करम कीया धुल धानी
॥ ध० ॥ ६ ॥
पुज गुमान चंद्रजी गुरु मिलया, सेठ कथा ज्यां सुन आणी
रिख रत्नचन्द्र जी पाव बन्दे, केवल ले गया निरवाणी
॥ ध० ॥ ७ ॥

॥ श्री रहनेमी जी की सझाय ॥

देखी देवर को मन डोल्यो, राजे मती कहे एम ॥
काम केल करणी इण काया नेम बिना मोहे नेम ॥
देवर दूर खडोरे, लोकां भरम धरेगा ॥
नारी संग किया सुरे, पावे पिंड मरेगा ॥१॥
जोवन रूप रच्यो जगदिसर, जगने मोह्यो जाल ॥
कामी मिनख मारण करतारे मूढ़ मे पड़दे फाल ॥देवर
केसर वरणी देखी काया, मूढ़ करे मन हुंस ॥
विष ए जेहेर हलाहल गोरी, जैसे सुली के तूंस ॥देवर
देखी नेण काजल सुं भरया, जाणो दल बादल का ॥
कामी पुरुष मारण विष लिना काम देवका भलका ॥देव
कणक कलश मारिग्या थणदेखी, मूढ़ जाणे मनमाह ॥
कामी धीज मरावण करना लोहा गोला की एह लाह ॥देव
उज्जवल कुलने कलंक चढ़ावे, नावे दुरगत उंडी ॥
खोवे लाज जनम की खोटी, नारी नरकनी कुंडी ॥देव
राजा जाणे मो पर रूठे, खर चढ़ै सिर मूंडो ॥
जगमय मांही सुडकरे कथा, ए करणी जग भूंडी ॥देव
फिरना, गिरना, राज दुवारे, संचरना फिर गलीया ॥
रमे हान दे दाली महाजन, दे खड़े आंगलीया ॥देवर
दुमयणारो हांसी चितयियो, मांमल पान नु मिणी ॥
काम पजार्यो करसे हांसो, जामी साम्र हाम्णीणी ॥
॥देवर॥६

वंसछोत लागे तुम कुलधी, सहुजग हेसी सिंचो ॥
परियानों पाणी उतरसे, जादव जोसो नीचो ॥देवर॥१०॥
भोजाइ सुं एह अकारज, उत्तम ने नवी बाजे ॥
अति मीठो हुवे तो पिण देवर, अखज कहो किम खापजे ॥देवर॥११॥
सुणी वात लाज्यो मन मुनिवर, लागो राजुल पाप ॥
कुवचन जेमे कह्या पानी, ते खमजो मोरी माय ॥देवर॥१२॥
तुं मुज माता वेन सुहावण, तुं तिरथ तुं गुरणी ॥
तुं मुजतारण पाप निवारण, तुं मुज पातीक हरणी ॥देवर॥१३॥
धनधन राजेमती सतवंनी, जिण लाज्यो रहनेम ॥
वचन वाण देई वस आणयो, अंकुश देई गजजेम ॥देवर
नगरी माहे वड़ी द्वारका सोरट देश मंझार ॥
कुलमाहे जादव कुल मोटो, शीलवंत नेम कुमार ॥देवर॥१५॥
सती माहे राजेमती मोटी, मुनिवर माहे रहनेम ॥
गह पतमे विजय प्रभु सुरिदा, ऋद्धि हरप कहे एम ॥देवर॥१६॥

॥ श्री महावीर स्वामी को पराणो ॥

दोहा—श्री अरिहंत अनंत गुण, अतिसे पुरण गात ॥
ज्ञानी ध्यानी मुनि संजमी, कहिए उत्तम पात्र ॥१॥

पात्र मणी अनु मोदना, करतो जीरण सेठ ॥
श्रावक ऊँची गतिलही नवग्रीवेग ने हेठ ॥२॥

इम चोमासा वीरजी, विचरतां संजम वास ॥
विशाला पुरे आविया, इग्यारमें चोमास ॥३॥

ढाल—चोमासो इग्यारमे जी विचरंत सञ्जमधीर ॥
विसाला पुर में आवियाजी स्वामी श्री महावीर ॥
जगत गुरु त्रसला नन्दनवीर ॥१॥

भले भले भेट्या जिनराज महावीरी, मेरो भाग अनोपम सार
मेरा चोक पुराओ आज ॥ जगत ॥२॥

बलदेव नो देहराजी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥
[illegible] चोमास [illegible]जी, स्वामी [illegible] तप कीध ॥ज०॥३॥

जीरण सेठ तिह वसेजी, पाले श्रावक धर्म ॥
[illegible] करी [illegible]जी जाण्या धर्म नो मर्म ॥ज०॥

आज [illegible] स्वामी श्री महावीर ॥
[illegible] देसु दान ॥ज०॥

[illegible] इम चिन्तवेजी, सफल होशी मुज आस ॥
[illegible] पूरण थयो चोमास ॥ज०॥

[illegible] सेजे हुई सवार ॥
[illegible] वेंदा वेरे वार ॥ज०॥४॥

[illegible] नोत्या [illegible] वार ॥
[illegible] विनंती करी वारंवार ॥ज०॥

निरधन जिम जिम चिंतवेजी, तिम तिम निर फल थाय ॥ज०॥१६॥
स्वामी जी कियो तिहां पारणो जी, कियो उग्र विहार ॥
आया पास संतानीयाजी, छे मुनि केवल धार ॥ज०॥२०॥
विसालानो राजवी जी. लोक सहु आनन्द ॥
राय प्रश्न करे इसोजी सतगुरु चरण पाय वंद ॥ज०॥२१॥
मेरे नगर में कुण अछे जी, पुन्यवंत ने जसवंत ॥
कहे केवली आज अवे जी, जीरण सेठ महंत ॥ज०॥२२॥
राय कहे कीण कारणे जी, जीरण सेठ महंत ॥
दान दियो श्री वीरने जो, पूरण छे जसवंत ॥ज०॥२३॥
राय प्रते कहे केवली जी, परण दियो दान ॥
हेम वर्षा तिहां हुई जी अवर नहीं परमाण ॥ज०॥२४॥
देव लोक जिण वारमे जी, जीरण भाल्यो बन्द ॥
अनदिभां दियो फलरो जी, उत्तम फला सम्बन्ध ॥ज०॥२५॥
एक घड़ी सुर दुंदुभी जी, जो नई सुणतो कान ॥
तो जीरण लेतो सदाजी उत्तम केवल ज्ञान ॥ज०॥२६॥
राय जीरण वधावियोजी, अधिको मान सनमान ॥
मुख्य नगरमें थापीयो जो, जोवा पुण्य प्रमाण ॥ज०॥२७॥
दान देवे सुपात्रने जी, से नही निरफल होय ॥
पात्र तणी अनुमोदना जी जीरण सेठ फल जोय ॥ज०॥२८॥
इम जाणी अनुमोदना जी, दान सुपात्र रसाल ॥
दान देवेछे साधु ने जी, तेने नमे मुनि माल ॥ज०॥२६॥

॥ श्री उपदेशी स्तवन ॥

पूरव सुकृत करीने, मानवारो भव पाया ॥
आर्य क्षेत्र ने कुल उत्तम छे, वली निरोगी काया ॥
अब थाने जोग मिलियोछे, थें ल्यो जिनवर जीरो नाम ॥
सुज्ञानी योग मिलियोछे ॥
पूरी इंद्रिया लांबो आउ खो, वली साधकी सेवा ॥
सुण जो जती वायक प्रणमुं, वाणी अमृत मेवा ॥अ० ॥२॥
आठ बोलरा ठाणा मिलिया, नहीं थांरी सरधा सूंटी ॥
कुगुरु कुदेव समरण, कुबुद्ध कुमन मनकूटी ॥अ०॥३॥
आदेही धारी भसमज होसी, किया चंजनसुं चरचा ॥
दान शील तप भावना भाव जो, लारे लिजो खरचा ॥अ०॥४॥
चार पहेर का लेणा देणा, चार पहेर का घाटा ॥
आठ पहेर जब वित गया, तब आयां मुद्दल में तोटा ॥अ०॥५॥
बिसा तीसा भलो पचासा, लगा निसाना नेमा ॥
करना होय तो करले प्राणी, हुवा वड़ा अंधेरा ॥अ०॥६॥
रात दिवस तुं धंदो करतो, जिन जीरो नाव न लेतो ॥
तेरा सिरपर काल डूरंछे, वंब नगारो देतो ॥अ०॥७॥
मात पिता भाई सुत बंधव, हुवा स्वारथ वेला ॥
दिनरे खतरा जासी जीवहे, सबी फकारा मेला ॥अ०॥८॥

साच भूठ कर जगने ठगिया माल पराया खाया ॥
अण चिंतवीयो थांरो आयो, आउट घडीरी सब माया ॥अ०॥६॥

साची मनकर देवने सिमरया, जे सिमरया जे खोटा ॥
याद नहीं आणी मनमाहे, भया जङ्गलमें मोटा ॥अ०॥१०
माया ममता सबी मेटकर, जिनधरम कर वासको ॥
कहे साधु जी सुनो भविकजीव, इण अवसर तुम मतचु ॥अ०॥११॥

सतगुरु मित्र हियामें धारो, कुबुद्ध कुमन निवारो ॥
बार बार सतगुरु समजावे, काया कारज सारो ॥अ०॥१
करो सामयिक पोसा पडिकमणा, देसम गौतम माला ॥
दिन दिन चलना नेड़ा आया, कीसा भरम बैठा ॥अ०॥१
दान धरम थे कद नहीं कीना, मन समता नहीं आणि ॥
आउखा जाना वार न लागे, ज्यों अञ्जलमें पाणी ॥अ०॥१४।

जीव जंप जीवाने बंछे, मरण न बंछे कोय ॥
जीव जीयाणं हणना थका, मुक्त न पहुंता कोय ॥अ०॥१

॥ श्री पारसनाथ जी का स्तवन ॥

तुम भले विराजो जी ॥
श्री मावन्दीया महाराज सिम्बर पर, भले विराजो जी

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाश मापूरयन् ।
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुर नर श्रेणीं च विस्मापयन् ॥
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन् ।
श्री चिन्तामणि पार्श्व संभव यशोहंसश्चिरं राजते ॥१॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभ कुम्भे सृणि-
र्मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्र करिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः ।
दाने देव मणिर्नतोत्तम जन श्रेणिः कृपा सारिणी ।
विश्वानन्द सुधा घृणिर्भवभिदे श्री पार्श्व चिन्तामणिः ॥२॥

श्री चिन्तामणि पार्श्व विश्वजनता संजीवनस्त्वं मया ।
दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ॥
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं ।
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिन भयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥३॥

यस्य प्रौढतम प्रताप तपनः प्रोद्दाम धामा जग
ज्जङ्घालः कलिकालकेलि दलनो मोहान्ध विध्वंसकः ॥
नित्योद्योत पदं समस्त कमलाकेलि गृहं राजते ।
स श्री पार्श्वजिनो जने हितकृते चिन्तामणि पातु माम् ॥४॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोऽपि कल्पाङ्कुरो
दारिद्र्याणि गजावलिं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः कणः ॥
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो ।
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगती कष्टानि हर्तुं क्षमा ॥५॥

श्री चिन्तामणि मन्त्रमो कृति युतंऊँ ह्री कारसाराश्रितं ।
णो मर्हनं मिऊण पास कलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ॥
धा भूत विषापहं विषहरंश्रेयः प्रभावाश्रयं ।
सोल्लासं वमहाक्षितं जिन फुल्लिङ्गा नन्ददं देहिनाम् ॥७॥

ॐ ह्री श्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायन्तिये योगिनो ।
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्व मधिपं चिन्तामणि संज्ञकम् ॥
भाले वाम भुजेच नाभि करको र्भूयो भुजे दक्षिणे ।
पश्चादष्टदले पुते शिवपदं द्वित्रै र्भवैर्यान्त्यहो ॥८॥

॥ स्त्रग्धरा ॥

नो रोगा नैव शोको न कलह कलना नारिमारिप्रचारो—
नैवाधिर्नास माधिर्नच दर दुरिते दुष्ट दारिद्र तानो ॥
नो शाकिन्यो ग्रहानोन हरिकरिगणा व्यालवैताल जाला
जायन्ते पार्श्व चिन्तामणि नतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम
॥९॥

॥ शार्दूल विक्रीडित ॥

गीर्वाण द्रुमधेनु कुम्भ मणयस्तस्पाङ्गणेरङ्गिणो ।
देवादानव मानवाः सविनयं तस्मै हित ध्यायिनः ॥
लक्ष्मी स्तस्य वशा वशेव गुणि नां ब्रह्माण्ड संस्थापिनी ।
श्री चिन्ता मणि पार्श्वनाथ मणिशं संस्तौतियो ध्यायते ॥१०॥

॥ मालिनी ॥

इति जिनपति पार्श्वः पार्श्व पर्श्वाख्य यक्षः
प्रदलित दुरितौघः प्रीणितः प्राणिसार्थः ।
त्रिभुवन जनवांच्छा दान चिन्ता मणिकः ।
शिव पद् तरुबीजं बोधिबीजं ददातु ॥११॥

इति

॥ श्री उवसग्गहर स्तोत्र ॥

(अनुष्टुप्)

उवसग्ग हरं पासं । पासं वन्दामि कम्मघण मुक्कं
विसहर विस निन्नासं । मङ्गल कल्याण आवासं ॥१
विसहर फुल्लींग मंतं । कंठे धारेइ जो सया मणुउ
तस्स गहरोग मारी । दुट्ठजरा जं त उवसामं ॥२
चिठ उदूरं मंतो । तुभ पणामोवी बहुफलो होइ
नरतिरिएसुवी जीवा । पावन्ति न दुक्ख दोगच्चं ॥३
ॐ अमरतरु कामधेणु । चिन्तामणी काम कुंभ माइया
सिरि पास(पार्श्व)नाह सेवा । गहाणं सव्वे विदासतं ॥४
ॐ ह्रीं श्री ऐं ॐ तुह दसणेण सामीय ।
पणासेइ रोग सोग दुक्ख दोहगं
कल्पतरु मिव जायइ ।
ॐ तुह दसणेण समफल हेॐ स्वाहा ॥५

ॐ ह्रीं नमिउण घोप्पणा म्राय। मागाधी एण भरणनागिंदं ॥
सिरि कामराज पढीँ। पास जीणंइंननंसामि ॥६॥

ॐ ही श्री पास चिसहर। विश्र मंतेण भाणंभाए।
च्चोभरण पौमावइ देवा ॥ ॐ ही क्ष्म्लवँ पुंस्वाहा ॥७॥

जयउ धरण देव। पइ महुत्ती नागणी विस्रा ॥
विमल भाण संहियो ॥ ॐ ही क्ष्म्ल यँ ग्रुं स्वाहा ॥८॥

ॐ धुणा मीपासं। ॐ ही पणमामी पर मभत्तीए॥
अठग्बर धरणें दो। पउ मावय पय डीयो कीत्ति ॥६॥

जस्स पय फमलसय। घसइ पोमावय धरणें दो ॥
तस नांमइ सयलं। विसहर विस नासेइ ॥१०॥

तुह सम्पत्ते लद्धे। चिंतामणी कप्प पायवब्भ हीए॥
पावंती अवीग्घेणं। जीवा अवरामरं ठाणं ॥११॥

ॐ नठ ठमय ठाणे। पणठ कमठ नठ संसारे।
परमट नीठी अठे। अठ गुणा धीसंर वन्दे ॥१२॥

सनुह नाम सुद्धे मंते। जो नर जपंति सुद्ध भावस्स ॥
सो अयरा मरं ठाठां। पावंती नयगय सुखं ॥१३॥

पनास गोषी डांकुर। गहदंसण भयं कायें ॥
आवीन हुंती एतहवी। तसी भ्रंगुणी जासो ॥१४॥

पिउजांत भगंदरं। खास सास सुल तहनीवाह ॥
सिरि सामल पास महं। तनाम पउरप उलेण ॥१५॥

रोगजल जलण विसहर । चोरारि मइंद गयरण भयाइं।
पास जिणनामसं । कित्तणेठापस मंति सव्वाइं
इअंस थुओ महायस । भत्ती भरनिब्भरेण हीय एव
ना देव दीज्ज बोहिं । भवेभवे पास जीण चंद

॥ ॐ ॥

॥ श्री घटाकरण स्तोत्रम ॥

(अनुष्टुप)

ॐ घंटा करणो महावीर । सर्व व्याधि विनाशकः
विस्फोटक भयं प्राप्ते । रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥
यत्रत्वं तिष्ठसे देव । लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति । वातपित कफो द्भवाः ॥२॥
तत्र राज भय नास्ति । यांति कर्णोंजपात्क्षयं ॥
शाकिनि भूतवेताला । राक्षसा प्रभवंतिन ॥३॥
नाकाले मरण तस्य । नच सर्पेण दृश्यते ॥
अग्निचौर भय नास्ति । ॐ घंटाकरणो नमोस्तुते
ठः ठः ठः स्वाहा ॥४॥

॥ प्रेम भजन ॥

कब होगा प्रभु कब होगा, यह दिवस हमारा कब होगा।
हम सबसे सच्चा प्रेम करें, यह दिवस हमारा कब होगा॥
हम पतितों से अति प्रेम करें, और दुश्मन पर भी रहम करें
हम सब जीवों से क्षेम करें, यह दिवस हमारा कब होगा
अभिमान भ्रम को छोड़ेंगे, जिन वाणि रहस्य समझेंगे
फिर तत्त्व हृदयमें धर लेंगे, यह दिवस हमारा कब होगा।
यह निन्दा चुगली दूर रहे, और ईर्ष्या मन से भग जाए
हृदय से प्रेम उमड़ आए, यह दिवस हमारा कब होगा
यह साधु मेरा तेरा है, यह संघ भी मेरा तेरा है।
यह फिरका [illegible] मिटे, यह दिवस हमारा कब होगा॥
हम पक्षपात को छोड़ेंगे, और सत्य हृदय में धारेंगे।
[illegible] गच्छा एका हुए, यह दिवस हमारा कब होगा॥
बाईस के बत्तीस हुए और दिन २ प्रति बढ़ते जावें।
यह सबके [illegible] एक करें यह दिवस हमारा कब होगा॥
स्वभाव गुण में रमण करें और विभाव गुण को छोड़ेंगे।
फिर मन मुनि जिन गुण गावें यह दिवस हमारा कब होगा॥

[illegible]

'सार सुख पाना हो तो त्यागी बनो।
केवल ज्ञान उपाना हो तो त्यागी बनो॥
त्याग बिना कोई मोक्ष न जाय त्याग कर से पार रुक जावें।

कर्म खपाना हो तो प्यारे त्यागी बनो,
त्यागी को सुर नर नमते हैं।
धरते चरण विघ्न टलते हैं,
गर्भ बिच नहीं आना हो तो प्यारे ॥
चक्रवति की रिद्धि भारी, त्याग सामने तुछ हैं सारी।
आत्मा उच्च बनाना हो तो प्यारे ॥
जहाँ वैराग्य वहाँ पावे, सुर वीर नर पार लगावें।
जग से मोह हटाना हो तो प्यारे ॥
पुद्गिलक सुख भोगे चक्र गनिमें तृष्णा पूरी हुई न जगतमें।
दुख मिटाना होतो प्यारे ॥
इन्द्रीय जनीत सुख विषय समहैं, किम्पाक फल यह शास्त्र कथन है।
सच्चा सुख पाना हो तो प्यारे ॥
वीर प्रभूने त्याग किया था, तन मनसे बलिदान किया था।
सन्त मुनि सुख पाना हो तो प्यारे ॥

॥ गायन ॥

यो तन पावनो रे या को मत कोई करे गुमान।
तिर्थंकर चक्री हुआ रे जीन का कंचन वर्ण शरीर ॥
आगम देवे साक्षी तन को, छोड़ गए अमीर गए १।
अन्तेवर रम्भाज सीरे रमणी रूप विशेष ॥
गहणा कपड़ा जेवर जड़ाऊ मोहा सुर नर देखा।
भीतर हाड़ मास रुधिर है जिसमें भरी दुर्गंध २॥
ऊपर मड़ियो चामड़ो, याँ पे मत भूलो मति मंद।

ऊपर रंग सुरंग छेरे तां ऊपर सिंगार ॥
मन मानी करता घणारे उरमें भरी अंगार ३ ।
समझो २ सब नारी भव पूर्व को सोच ॥
कहाँ से आया कहाँ जाना है संत सुनिकर सोच ४ ।

॥ गायन ॥

मनवा मोह नींद को त्याग २ नाम रूपमय यह जग स्वपना
क्या सोवे है जाग ॥
जिन विषयों को आज भोग रहा कल वह स्वप्न समान ।
इनमें कहाँ भयो रत मूर्ख, अज हो अचेत अजान ॥
मायाका सुख आदि अन्त वत् याँ से क्यों भरमाय ।
ब्रम्ह अनन्त अनादि है ये वाको क्यों विसराय ॥
मनुष्य जन्म दुर्लभ है मिलना बार २ नहीं पाय ।
उठ स्वरूप चिन्तन कर जोरे बहुरी यहाँ नहीं आय ॥

॥ गायन ॥

समय के फेर से जो भारत दशा और की और ।
पितु आज्ञा रामचन्द्र ने वन की करी तैयारी ॥
आज बाप से सम्मुख लड़ते देते मुख से गाली ।
सत्य निभावन हरिश्चन्द्र ने दिया राज का दान ॥
खोटी गवाही देते फिरते भारत के संतान ।
सत्य व्रत धारी भिष्म पिता थे रहे बाल ब्रह्मचारी ॥
आज उनही के कुल में उपजे ताके पराई नारी ।
नल राजा ने दमयन्ति से चीड़ फाड़ कर लीना ॥

आज तो गहने कपड़े खातिर नित उठ पति से लड़ना।
कहां गए गोपाल कृष्ण गोओं के लाड़ लड़ाते ॥
आज अधर्मी, गो वेटी को वेच २ कर खाते।
पहिले पति परदेश सिधाते नार उदासीन होती ॥
आज पति परलोक सिधावे रगड़ २ पग धोती।
काम देव अरणक श्रावक को देव ने शीश झुकाया ॥
आज भैंरू रामदेव करणी माँ शीश झुकाया।
पद्मावत्ती और जोहर बाई धारणी शील रखाया ॥
अग्नि कुण्ड में जिन्दी जल गई जबि खेचली बांया।
आज की बांया मोज शौक फैसन में आनन्द माने ॥
पति धर्म को जो नहीं समझे मनुष्य जन्म को हारे।
पहिले की अवला नारि तो सासू नन्द की सेवा करती ॥
आज की अवला रगड़ झगड़के मनमाना हुकम चलाती है।
मोटा खाते मोटा पहनते मोटा जिनका प्रेम ॥
आज तो पतला पहिने खावे पतला जिनका प्रेम।
सट्टा बाजी और सिनेमा फैसन में धन को लुटावे ॥
दान धर्म के हित कहे तो ऊँचा बोल सुनावे।

॥ गायन ॥

विषय बड़ा दुख दाई अरे चेतन प्यारे
क्यों इसमें ललचाय अरे चेतन प्यारे।
मोह कर्म वस बह जाते हैं, शुद्ध बुद्ध भूल दुख पाते हैं।
जन्म मरण बढ़ जाए चेतन प्यारे ॥

विषय भोग जब तक नहीं छूटे तब तक कोई मुक्ति ना पहुंचे
शास्त्रों में फुर माय अरे चेतन ॥
अमृत छोड़ जहर जो पीते चतुर नहीं वो मूर्ख बजते।
चतुर गनि रूलथाय ॥
शब्द सुनी हिरना बस होवे दीपक देख पतंगा रोवे।
भंवर सुगन्ध ले दुखपाय ॥
रसना वस व मीन मरे हैं कामाना गज हथिनि परे हैं।
भ्रट से प्राण गमांय ॥
पांच चोर से प्रेम करे हैं, आत्म सुख का नास करे हैं।
सन्त मुनि यो गाय, अरे चेतन…

॥ गायन ॥

मुझको दूर रखो भगवान ऐसे बिन धर्मी लोगों से,
ऐसे फैशन के लोगों से।
परम्परा गत सादापन का कर दिया देश निकाला,
उल्लू जैसा रूप बनाकर फिरता है मतवाला।
सतसंगत मे कदय न आवे गप्पा खूब उड़ावे,
बनके मंडली सांझ सवेरे एक मिल फिर आवे।
फजर उट्ठो सूनो उठो आलस्य न छोड़े,
ले बीड़ी मुंहमे पीनो टट्टी सामो दोड़े।
पहिले पीवे चाय वो तो पीछे मुंडा धोवे,
मूंछ मंडायन करे हजामन मर्दपणा ने खोवे।

टाई टोप पतलून पहिन कर नेत्रों पर नेत्र चढ़ावे,
सेंट सुगंधित शाल घाल में मुखमें पान चबावे।
जीते जी मां बाप वृद्ध की सेवा नहीं बजावे,
मरे बाद मोसर का मुण्टा लाडू खूब उड़ावे।
शुद्ध गुरु की सेवा छोड़ी भेरूंराम देव को ध्यावे,
गये पण्डों के चरणों में जाकर शीष नवाए।
हाथ बांसे तम्माखू से दांत गधा सा दीखे,
ऐसे मनुष्य की संतान वे ज्ञान कठा सूं सीखे।
पुरुषार्थ ने खोटो समझे मांग तांग ने खावे,
ऐसा मनुष्य पराया वश है वृथा जन्म गमावे।
मर्द हो के सीखें वो तो जनाने की चालें.
चोटी न रखे टोपी न रखे खुलो सिरयों डोले।
भांग पीवे और उल्लू रहवे मनमें समझे मोटे.
अघंगलामें अक्ल बतावे उनसे भी वे खोटे।
खूब गया भारत का पैसा अब तो मस्ती छोड़ो।
नियम धर्म में प्रीति लगाकर संतो से प्रीति जोड़ो॥

॥ गायन ॥

सुनलो रे वीर प्रभुजी मन वश में नहीं होता.
प्रबल पुण्य का उदय हुआ तब मानव तन पाया।
सत्संगत का निमित मिला फिर जैन धर्म भी पाया,
मन वश करने जोग लिया फिर साधु भेप बनाया।

गुरु गणेशी चरण भेट या ज्ञान ध्यान सिखलाया,
छिन में राजा छिन में योगी बनकर ध्यान लगाया
छिन में छैल छपीला होकर दौड़ दिशावर जावे,
पहिले बाग बगीचा जाकर गोठ घूमरी खावे।
इन पापो ने डर नही लागे जङ्गल में फिर आवे,
जिम तिम जत्न करीने राखू निम २ अलगो भागे
शर्म रति नहीं राखे किसकी इधर उधर को भागे,
जैं जैं बात कहुं नहीं धारे आप मति रहि न्यारो।
सुरनर पण्डित जन समझावे समझे न मारो सारो,
मैं जानूं यह लिंग नपुंसक सकल मरदने ठेले।
नौकपाय मेणी गज चढ़ता श्वान लहि गत झेले।
धर्म ज्ञान सत्य बान भूलावें पाप से भय नहीं खावें।
सम्यक ज्ञान बिना फिरे भटकता विषयों में ललचावे
पलभर में नर्क दलिए करता पल में स्वर्ग चुनाता।
पलमें निगोद झाले बुनता है आकाश गगनमें जाता
इणरे स्वातिर दुख में भुगत्या बार्गा नाच नचाये।
और ठिकाणे साधे २ धर्म मे आगो भागे॥
इस भवमें प्रभू मन वश करदो जन्म मरण मिट जावे।
पूज्य गणेशी नाम रटे से संत मुनि सुख पावे॥

॥ गायन ॥

करले २ अब चेतन करनी धर्म साथमें जाय,
पल पल आयु जाती छिन में पीछे यह नहीं आए।

नहीं भरोसा साँस स्वास का कब निकली यह जाए,
राज, तख्त और भरा खजाना यहाँ धरा रह जाए।
घर की नारि प्राण से प्यारी वो भी साथ न जावे,
कांच में मुखड़ो नरख २ कर फूलरयो मन माय।
हाड़ मास मल मूत्र है अन्दर आखिर विनसी जाय
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला सब स्वार्थ के भाई,
अन्त समय दांतो की चुपें काढि लेगा भाई।
हीरे पन्ने गहणे पहिने बैठे मोटर माय.
आगे पीछे मरना तुमको मोहन भोग छिट काय।
तू नहीं किसका कोई न तेरा सब झूठाहै नाता,
खरा मित्र धर्म है यारो यही साथ में जाता।
चार कोस जब जावे भाईबांधे खर्ची लारे,
पर भव जाना तुझको चेतन इसका करो विचार।
अपना २ देश पुकारत चले गए केई राना,
इन्द्रजीत, रावण अभिमन्यु भीम जेसे बलवाना।
करना हो तो करले प्यारे कालचंद्र सिर आए.
यह नहीं छोड़े भाई तुझको, अब झटकेसे ले जावे।
दानशील तप भावना साधे निराबाद सुख पावे,
पूज्य गणेशी नाम जपेसे जन्म मरण कट जावे।

॥ गायन ॥

सच्चा मित्र संसार में एक धर्म नजर में आना,
मात पिता और भगिनी भाई झूठी है संसार सगाई।

जिन पर है तू रहा फुलाई

देगें धोय क्षण चार में जब निकल पवन है जाता।

पाप कपट कर द्रव्य कमाया, अनहंद तूने जीव सताया,

निस दिन जिस पर रहा भुलाया

क्यों फंसा इश्क प्यार में, है धन पर सब दुख दाना

सुन्दर ऊँचा महल चुनाया विषय भोगों में तू ललचाया

झूठी माया में भरमाया, सोच समझ दिन चार में

छूटेगा सबसे नाता।

संकट सब दुख सब टल जावें, दुश्मन आकर शीश नमावें

जो निज धर्म सदा मन ध्यावें पावें शिव सुख स्थान को

सब मिटे रोग का खाना।

। गायन ।

कलयुग नर आयो ॰ सुण लीजो सबा हाल

धन लोभी जो मात पिता वृद्ध नर को दे गाल

नक स्वाद नो दुख मंडे पापी मानो माल

सती त्रियाने फिर उघाडी वेश्या ओढे साल

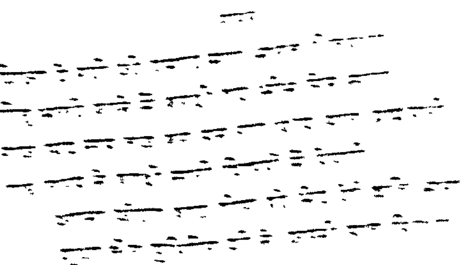
उद्धमान पिता नर गावे पर पत्र उड्डावे माल

ज्ञानी त्याग नो फिर नोकरी सचे है नृपाल

कली काल स यथा मित्र नृप भजा प्रभु त्रिकाल।

दुनिया में जन्म पाप सदा क्या है कमाया

माया में रह नर जन्म नाहीं गमाया, हाँ यो ही गंवाया



राज हार सब भाई हारे हारी द्रोपदी नारी
अत्याचार किया द्रोपदी पे दुर्योधन ने भारी
जल्दी ही फल दिया जुल्म ने कौरव कुल संघारी
कष्ट पड़े पर सत्य धर्म ही करना है रखवारी
सत्य ने ही द्रोपदी को लज्जा राखी सभा में जारी
परोपकर निस्वार्थ सिखाती कुन्ती माता भारी
ब्राह्मण के बदले राक्षस के भेजा सुत सुख कारी
विद्याधर कैद पड़ा जब दुर्योधन अहंकारी
लव छुड़वाया धर्म नन्द ने अपना बंधु विचारी
बिना जान पहिचान दुखी के कैसे हो सहकारी
सुखी किया अर्जुन ने इन्द्र को राक्षस विद्रोह हारी
दुष्टों की संगति से बिल्कुल जाति है मति मारी ॥
कौरव सग भीषम ने गायें चोरी विराट मंझारी
पर नारि के छेड़े का फल होताहै दुख कारी
भीमसेन ने मारा कामो कीच की भूमि पछारा
सलाह कराने खातिर सज्जन करते कोशिश भारी
पाण्डव कौरव बैर मिटावण बन गए दूत मंझारी
प्रेम भाव में छोटे बड़ों का भाव न रखो विकारी
रण में अर्जुन का रथ हांका खुद ही कृष्ण बिहारी
गृहस्थ धर्म पालन कर पाण्डव हो गए मुनिव्रत धारि
धर्म शूरमा बन कर बन गए अमर सदा अविकारि

॥ गायन ॥

करले २ ये चेतन करनी समय मिला अनमोल
भूल भूलैया में सब खोया खावे गोते भारी।
अन्त काल से भटक रहा है अब करले तैयारी॥
मात पिता सुत बन्धव भगनी धन दौलत भी पाया।
चोर पलि है कुटम नहीं है क्यूं इसमें भरमाया॥
पर की खातिर काल गमाया मोह माया में लुभाया।
करि कमाइ नहीं कुछ आकर उलटा यहां गमाया॥
तू नहीं किसका कोई नही तेरा सब झूठा है पसारा।
पर की चिन्ता छोड़ो चेतन करलो निज निस्तारा॥
अपना २ देश पुकारत चले गए कई राजा।
रामचन्द्र युधिष्ठर जैसा जग में नाम कमाजा॥
मूल पूंजी को हार मत ना नफा कमा कर जाना।
मनुष्य जन्म मिलना दुष्कर है साव चेत हो जाना॥
पुद्गल नामी तू अविनासी यही तत्व है सारा।
पुद्गल चाह मिटावे सत मुनी पावे मोक्ष द्वारा॥

॥ गायन ॥

मानो माना री प्यारा बहिनो छोडो सब मिथ्यात॥
मनुष्य जन्म पाया मुश्किल से सुनलो ध्यान लगाई।
अन्य भ्रमो मे जनम न खोवे गुरु कहे समझाई॥
जैनी कुल में जन्म लियो सत गुरु की सगत पाई।
जिन साम्त्र का पठा सुनो जरा मिथ्या दिल से हटाई॥

होली माता तीज न पूजो राखी और गनगोर ।
राम देव भैरू भोपा को पूजा फल न होई ॥
चोवरा में दाना पानी डालके करी पूजा ।
नीति मार्ग दया को छोड़ा ये क्या उलटा सूझा ॥
झाड़ो और मूर्ती को पूजके धन ओलाद को चावो ।
उनकी रक्षा उनसे न होती तो तुम क्या फल पावो ॥
सुध देव गुरु धर्म शास्त्र से रखो सचा प्यार ।
सफल होयगी मनो कामना संत मुनि जय कार ॥

॥ गायन ॥

तज दो तज दो ए प्यारी बहिनों फैशन का श्रृङ्गार
तजे पुराने जेवर अब तो पायल को अपनाई ।
सीधागूथना छोड़ा अब तो टेढ़ी माँग जमाई ॥
पति देव की एक मास की द्वादश की हैं तनख्वाह ।
तुम्हें फैसनेबिल कपड़ों का खूब लगा है चसका ॥
रिष्टवाच तुमको एक चाहिए साठ रुपया वाली ।
पियर सोप नाहने को चाहिए डेढ़ रुपया वाली ॥
सादी वस्तु सादा कपड़ा सादी बन कर रहना ।
नाथ मुनि कहे सुख चाहो तो मानों मेरा कहना ॥

॥ गायन ॥

तुम सुनो सभी नर नार ध्यान धर आज कृष्ण गुण गाओ
जयन्ती आज मनाओ ॥

पापों की फल मिली छाई थी दुनिया भी अति दुख पाई थी
फिर जन्म लिया उसी बार सुखी जग पायो—जय
ये अरध निसानी भी आई थी घनघोर घटा भी छाई थी
अब करके आप प्रकाश पुण्य प्रगटायो ये धर्म दलाली
भी की थी।
दुनिया को साता दीनी थी फिर बांध तिर्थंकर गोत्र
अति सुख पायो—जयन्ती
सेवा करके बतलाई थी, साध जीतन पे रखाई थी।
अरे बुढ़े की उठावे ईंट नाम कमाओ
जो महा पुरुषों के गुण गावे, वो इस भवपार अब
सुख पाए ये मनुष्य जन्म को पाय भाव सुध लावो॥

॥ गायन ॥

क्या २ सत्य ताई यह है वृक्ष हमें सिखलाते,
अपने अपने मोसम पे जब वृक्ष खुब फल जाते।
छोड़ शीघ्र करड़ाई नम्र हो नीच को झुक जाते॥
मार मार कर ढेले लोग जब चोट इन्हें पहुंचाते।
तब खुश होकर देखो मीठे फल ये वृक्ष खवाते॥
सर्दी गर्मी वर्षा का दुख अपने पर ही उठाते।
पर निज आश्रित जीवों को तो हरदम सुख पहुँचाते।
सदा दूसरों को फल देते स्वयं कभी नहीं खाते।
दान वीरता और कृपणता साथ ही साथ सिखाते॥



॥ गायन ॥

सुनलो २ ओ बंधु जग में कैसे थे नर नारे ।
सत्य की खातिर हरिश्चन्द्र ने भरा भंगी घर पानी
दुख सहे रोहित सुत कैसे बिक गई तारा रानी ॥१॥
राम लखन और सती सिया ने बन में दुख उठाया
पितु आज्ञा और भाई प्रेम का जग को पाठ पढ़ाया ॥२॥
आठ ललनों का सुख धन जम्बू ने छिट काया
चोर पांच सो को समझाके मोक्ष गति को पाया ॥३॥
कामदेव अरणक श्रावक को देव डिगाने आया
निश्चल रहे धर्म के ऊपर सुर ने शीश झुकाया ॥४॥
खन्दक गन सुख माल मुनि सुर क्षमा वन्त ते भारी
खीरे रखे खाल उतारी डिगे न वीर लगारी ॥५॥
काया माया मोह हटाया वैभव तज सुख पाया
केवल सार यही दुनिया में धर्म करं सीख माया ॥६॥

॥ गायन ॥

तन नहीं लगा कोई चेतन निकल जाने के बाद ।
फेंक देते फूल ज्यों खुशबू निकल जाने के बाद ॥
आज करते जो किलोले खेलते हैं साथ में
कल देख डरेंगे तन निर्जीव हो जाने के बाद ॥
बात भी करते नहीं आज धन की एंठ में
भिक्षु नजर आते वही तकदीर फिर जाने के बाद ॥

बोलते जब लगे सगे हैं जब चार पैसे पास में
नाम भी पूछे नहीं पैसा निकल जाने के बाद ॥
स्वार्थ प्यारा रह गया असली मोहब्बत उठगई
भूल जाता मां को बछड़ा पैं निकल जाने के बाद ॥
भाग जाता हंसा भी निर्जल सरोवर देख कर
छोड़ देते वृक्ष पंछी पत्ता झड़ जाने के बाद ॥
इस अथिर संसार में क्यों मगन कुंदन हो रहा
देख फिर सूता नहीं अक्षुन्न हो जाने के बाद ॥

॥ गायन ॥

यूं कांई पड़ो पसरने डागी थारे कणी जगह जावा की।
कठी पचरंगी कठी अंगरखो कठी पागड़ी नाखी ॥
अरे टीकट टेम री खबर खोज नहीं कटगी गांठ टका की।
अरे घर घर जाण हुओ यो गाफिल रेल घणी ढांडेगी ॥
चढ़े जड़ी ने पड़े उतरने या है रीत उनकी।
आयो कठे सु कठे उतरेगा कितना टेसन बाकी ॥
खादी भंग गाल में की धी बोतल पीपी आखी।
कौन सुणे न किने कैवां हालत है नशा की।
शंकर सावधान हो जाने देख दशा दूजा की ॥

॥ गायन ॥

ईश्वर का गायन नहीं किया तो क्या है गायन गाने में।
प्रभू के प्रसाद में स्वाद नहीं तो क्या है बरफी के खाने में ॥

फिर जावे चाहे शत्रुन्जे गिर नारि सी करके औरमथुरा।
मन शुद्ध नहीं तो क्या है गंगा में गोता खाने से ॥१॥
दिन रात मंदिरों में जाकर सिर घिसले २ घिस डाले।
चेतन स्वरूप का ध्यान न हो तो क्या है ढोंग बनाने से॥
पंडित उपदेशक का पद ले मुंह फाड़२ उपदेश करे।
यदि शुद्ध सत्य आश्रम नहीं तो क्या सिधान्त सिखाने से॥
चाहे मृत्यु जन की अर्थ यहाँ कितना मिष्टान्न तैयार करो।
उपकार गुणों का स्मरण न हो तो क्या है श्राद्ध जमाने से
मीठे अमृत सम वचन कहे अनुराग प्रेम से भरे हुए।
विष कुम्भ पेया मुंह बंद करके क्या मिथ्या प्रीत दिखाने से
॥२॥

कोटीस देव देवी पूजो चाहे निपट इच्छा से।
[illegible] काशी गया यदि मुक्ति नहीं तो क्या दया धर्म कमाने से
॥३॥

भजन

[illegible] मन [illegible] की तुम [illegible] [illegible] मर जावनारे
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सिद्ध गति पावनारे।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मत छोड़ा अभिमान
[illegible] [illegible] अन्दर जीव आखिर मर जावना
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मन खोलो यहं मर जावनारे
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दुःख न दीजे

हहा हर पर भव का कीजे ढढा ढील करो मन भाई फिर पछतावनारे
नना तू क्या लेकर आयो थथा थिर नहीं रहेगी
दादा ददा दूर हटदे माया धधो धारे समकित रंग
भेद गति पावनारे पपा पाप को दूर हटावो फफा फिरे
हां पछतावनारे बबा बचन को खूब निभावो भभा भक्ति
बगर हरगिज मोक्ष नहीं पावना रे
या याद करो ईश्वर को ररा रोको अपने मन को
ला लोभ करो मत धन को ववा चोरी पल को छोड़ तिर जावनारे
सा समकित को सार षषा वह
य हृदय विचार शशा शास्त्र
र उचार हहा हंस राज कहे हृदय दया विचार नारे

॥ गायन ॥

मन पीयो तमाखू आवे मुखड़ा री भूंडी वासना
जरदो खावो चूनो रचावो जिनसे बिगड़े धन
पश्मीन चोली थुक २ क्यूं जगह बिगाड़ो कन्त
मगज सड़ावन वाली या तो रही न नरकी ठौन
कपड़ा वासे आप खांसे आवे छीक पर छीक
हुक्को थड़ी चिलम पिये से घर २ मांगे भीख
चले वायरो उड़ चिनगारी नहीं पीवन में ठीक
आग लगा धणी आदिका घर का धामा जावे
लोग हंसे और घर में हानि स्त्री थाने समझावे
समझ तमाखू सूंघ लीन कांई कुत्ता न खावेगा
जिनको पीवे मान बीसरे उनका खोटा भाग

कथा मानो मनि करो जी बुरी तमाखू हेत
टका एक की टांट में मारे दिन उगा ही देत
हुक्का से हुश्मन सब बिगड़ी लाज शरम गई छूट
सबका ऊँठा भूठा पीवे गयी हिया की फूट
सुख दुख देख दम्ब परायो थे लेवा भागी कीन्हों
भूखा मरता टाबर रोवे धुक २ तमाखू पीवो
थाँको लब्यो का जोसरे फेर बिगाड़े दंत
गुल उघाड़ी रास उड़ावी रांड तमाखु खाथ
बिड़ी पाल दियासलाई फेकें ताके बीड़ सभी जल जावे
घास तणो नुकसान
बीड़ी देवो नृली देवो इनके हाथ पसारे
बीड़ी बाज की दशा देखकर मंगता ही भकमारे
घर में बीड़ी बोर में बीड़ी भाड़े जाता बीड़ी
बीड़ी के बस ऐसा पड़या ज्यूं कीचड़ में कीड़ी
बाओ पीवो सूंघनां कैयन बाकी राखो तमाखू पर टूट पडो
ज्यूं भिष्टा पर माखो
भाड़े जानां बीड़ी पीवो भूंभो थे उड काओ
थां के सरीखा सुगला म्हाने और नजर नहीं आवे
सांची बात कहूं कं थाने भूठी एक न भाखूं
ठीक बात न होश नहीं जाने वह भी पीवे तमाखू
हूको तो हूद ने करे मरे चिलम तो है चंगी
तमाखू पर टूट पड़ा थे ज्यूं भूठा पर भंगी

जो कोई बामण पीवे तमाखू उनको देवे दान
बामन गाव गंडूरो होसी नरक पड़े जजमान
धर्म और धन बिगड़सी और बिगड़सी काया
अकल बिगड़ रह जासी आदी जिनस में समझाया
एक बीड़ी के कारण से थे अपने जीव हरावो
ढाँकणी में पानी लेकर डूबकी ले मर जावो
थे सायबजी जरदो खावो भारी मिलावो चूनो
मुन्हडो थारो ऐसु बांसे जाणे जाजूरो जूणों
इससे खोटो असर पड़े से छोरा ऊपर थांको
अब तो बीड़ी और चिलम ने तोड़ फोड़ कर नाखो
हिंदू आर्य और जैन धर्म दुर कोर
तो भी नकटा पणा करके पडा तमाखू लारं
धांसी खांसी दमो होसी पड़सी घणो खेवार
ऐसी तमाखू पीकर कन्धा काई काढ़ोगा सार
मानो तो या सीख हमारी, नहीं मानों मरजी
म्हे तो म्हारी तरफ से थाने साफ सुनायां अरजी
थांको म्हाको घर नहीं न्यारो जिनसे कहवा थाने
ऊँच नीच कोई बात करी तो माफ करजो म्हाने
तुको—दाढ़ी जले मूछ जले सिम्का और हून जले
लार जले हुंडी जले धून के पान से
आंख और कान जले नाक और जबान जले
छाती और माथो जले नाड़ी पीच पंजा फंसे

हुक्के की मिरस से दंत की पा और होट जले
हुक्का से शारा से हाथ जले जगत झूठ खाने से

॥ गायन ॥

यहां के महल मंदिर और न बिस्तर काम आएगें।
ए मिष्टर ये मदर तेरे न फादर काम आएगें।
नहीं वहां काम आएंगे तेरे बंगले या फुलवारी
नहीं वहां हीरा मोती और जवाहर काम आएंगे।
हजारों दोस्त है तो क्या यहीं तक की मोहब्बत है
की ब्रिटिश एम्पायार के न मैम्बर काम आएंगे।
वहां पर लोक में नहीं काम आते जज या बैरिस्टर
कजा के सामने बना न लीडर काम आएंगे।
हुक कामों से सरासर है मुलाकातें बहुत गहरी
मिपारष के वहां उनकी न लेटर काम आएंगे।
सवारी बैठने की वहां पे केवल और ही होगी
चलती रेल साइकिल और न मोटर काम आएंगे।

॥ गायन ॥

तर्ज–मूरख मन क्यों करता अभिमान

काल बली हल आन दबावे छिन में लेवे प्राण।
धन दौलत सब महल मालिया कुछ भी न अपनो जान
सगे संबन्धी जिस प्यारे सब ही सुख के जान।
विपत पड़े कोई काम न आवे मतलब के सब जान
० जगह है मुसाफिर खाना तू सोया चादर तान

महा पुरुष अवनीत को भी हारे विपदा सारी ।
गौशाला की रक्षा कीन्हीं तापस तेजु निवारी ॥
महा पुरुष पाते हैं शान्ति पापचार संहारी ।
दूर करि या बार्में प्रभू ने पशु हिंसा दुखकारी ॥
हृदय भवन से निकलेगी जब विपदा सा सुखहारी ।
तब ही आत्मानन्द मिले यह वीर कथन दुख हारी ॥
बनो कर्म योगी कर सुकृत होवो पर उपकारी ।
पृथ्वी चन्द्र के बली बनकर प्रभू ने जनता तारी ॥

॥ गायन ॥

पूरण पुण्य वाली हो जिस जीव की उसे ज्ञान उसी को
पापी जीव को ज्ञान लागे सिद्ध राज मिल जावे ।
बालू रेत का घर न होय कुम्हार पचि जाये ॥
खारा समुद्र मीठा न होय बालू से नहीं तेल ।
वह रथ कैसे काम आयगा जो मिट्टी के बैल ॥
इक्षु से मीठा रस पाय मूरखा पाये सांप ।
भावुक हृदय बसे आगार ज्ञानी गुरु समीप ॥
[illegible] कुल मेरा कुंवर गजमाल ।
[illegible] मूला न कोई करम कमाल ॥
जन्म ईश्वर न एक बार ले लागी आठों बार ।
[illegible] कर वीर जग के एक मोह है सार ॥

संगठन कच्चे धागे का होने से रस्सा बन जाता
अजि गज राज को छिन में देत वो बंध डारी है ॥
संगठन प्रेम से निभना प्रेम को प्रथम अपनाओ
'अमृत' से वचन वर्षा कर उन्नति दे बधारी है ॥

॥ गायन ॥

(तर्ज— सुन्दर रहिजे महिलो माय)

करलो मात पिता सेवा सुख बहु पावना रे ।
जिमसे मिलती शुभ आशीश विपद नहीं आवना रे ॥
करके खुद के तन का सोपन करते तात मात सुत पोष
उनका उल्टा देते दोषण लज्जा लावना रे ।
मित्रों बड़ा नाम उपकार कैसे भूल सके इणवार
जिनके चरणों में हरवार कि शीश झुकावना रे ॥
आयस तीर्थ सूयी मोटा उनको दुख देने में टोटा
मोटा तजकर के अभिमान के विनय दिखावना रे ॥
मायत भक्ति धार बनाई उनको भूल सकों किम भाई
आई कल्प सूत्र में बात के ध्यान जमावनारे ॥
पत पुण्य बन्न जो वैसा मायत सेवा रो जल लेसी
वांका अमर नाम जग रेसी 'अमृत' गावना रे ॥
भारत की रक्खी शान अहो देखो इन जैन दुलारों ने
प्रताप चला जब देश त्याज, यह भक्ति भामा शाह की
दासी कैसे होने बतलाया जैन दुलारों ने ।



असली दिवाना और है नकली दिवाना और है ॥
व्याख्यान सुन तल्लीन हो, मस्तक हिलाना और है।
आत्म रस में मग्न हो आनन्द पाना और है
धर्म सेवा ज्ञान सेवा संघ सेवा ना करी।
मुखिया कहाना और है सेवा बजाना और है ॥
आश्रय सर्वज्ञ का लें खैंचने एक पक्ष को।
सिद्धान्त पढ़ना और है पर रहस्य पाना और है ॥
गोतम व केशी की तरह संघ दल के नायक हैं।
प्रतिष्ठा पाना और है कर्त्तव्य बजाना और है ॥
महावीर के सेवक हमीं असली यों कहते हैं सभी।
अनेकान्त कहना और है अने कान्ती बनना और है ॥
धर्म ध्यानी 'शुक्ल' ध्यानी बनना चाहते हैं सभी।
विभाव ध्यान और है स्वभाव ध्याना और है ॥

॥ गायन ॥

करो प्रचार दुनिया में प्रभुका नाम लेकर
प्रसन्न चित हो धर्म खातिर जो अपने प्राण खोते हैं।
बहुत कम ऐसे क्रोड़ो में मनुष्य पुण्य वान होते हैं ॥
विलासिता पड़ी दुनिया चाहे सर्वस्व लुटा देवे।
उदय जब दुख कर्म आवें फेर नादान रोते हैं ॥
पड़े मिथ्यात्व या एकान्त में, नर तन को खोते हैं।
समय अनमोल जाता है वे चादर तान सोते हैं ॥

द्रुपद सुता को कष्ट दिए अति दुर्योधन अज्ञानी।
अन्याय किया पतिव्रता से तो कुल की हो गई हानि॥
गज सुकमाल मुनि सिर उपर अंगोर रखानी।
दान शील तप ग्रहण करे हो, अष्ट कर्म की हानि॥
पूज्य गुरु सु प्रसाद पाय मनि 'शुक्ल' मुनि कहे वाणी।
सोमल मर कर गया नरक में मुनि मोक्ष गति पामी॥
खन्दक मुनी के शिष्य पाँच सो घानीसे पिल वानी।
पालक मर कर गया दुर्गति मुनि सिद्ध गति पामी॥
रामचन्द्र को राजतिलक की हो रही थी थैठानी।
कर्म बजाई ऐसी भेरी वन को दिए भिज वानी॥
राज दुलारी चन्दन बाला मूला दुःख दिरानी।
पूरण अभिग्रह किया वीर का निरा बाद सुख थानी॥

॥ सत धर्म ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—मुझे है काम ईश्वर से

मिवा जिन वाणी के दुनिया सभी धोके की टट्टी है।
प्रलोभन में फिरे प्राणी विषय तृष्णा की भट्टी है॥
फिर तल्लीन स्वार्थ में प्रेम सब रण में बदला
बिना सर्वज्ञ के बाकी धर्म धोके की हट्टी है॥
कोई ज्योतिषि कोई स्याना कोई तंतर मंतर वादी
लगा कोई हथ फेरी में सभी भट्टों पर चट्टी है॥
धर्म से मींचकर आँखें पाप दिन रात करते हैं
और तो क्या यह सुन्दर तन भी होने वाला मिट्टी है।

॥ निर्मल आत्मा की त॰

॥ गायन ॥

तर्ज—हमें तो काम जिनवर से जगत
अरूपी आत्मा मेरी को क्यों रूपी
मुक्त हूं अष्ट कर्मों से उसी में फिर
अज्ञानत से अपने से भी मुझे नीच
कल्पना करके भगवन की मेरी मनु
पिता हूं विश्व भर का सिद्ध आत्मा
किसे फिर पालने में लोरियां देकर
सर्दी हो चाहे गर्मी हो मुझे
पहिनाते क्यों मुझे वस्त्र या क्यों
मैं शुद्धात्म हूं निर्मल हूं बनों तुम भी
पड़े मिथ्या भ्रम में तुम किसे मल
बना हूं निर्विकारी कामना मुझ में
पुष्प रस गायन वादित्र भला
मैं निरकर्मी नहीं भूखा मिष्ठ फल
कथा हे नाम मेरा पाप क्यों निम
धर्म करके जाल मिथ्या का
और रसातल
मेरा रक्षा

॥ निर्मल आत्मा की तरफ से ॥

॥ गजल ॥

[illegible]

मिले सार जब निर्मल आकर जनता ग्रहण करे सब सा
यथार्थिक सुख का—प्रेम की…
प्रेम बिना कुछ नहीं यहां है फिर सुर पुर या मोक्ष क
'युगल' ध्यान शुभ धार—प्रेम की…

॥ जैनियों ॥

॥ गायन ॥

तर्ज :–ज्ञान भारत के लिए अरु प्राण भारत के लिए
जैनियों अब धर्म रक्षा के लिए तैयार हो ।
लाल हीरे लुट गए अब नींद से बेदार हो ॥
पाखण्डियों ने ठान रक्खी है मिटाने की तुम्हें ।
प्रमाद आलस में मगर तुम लीन हो सर सार हो ।
नष्ट मानवता हो रही सामान के साथो इलाज ॥
कर्तव्य शील बनो सभी क्यों इस कदर बेदार हो ॥
चाह रहा संसार सच्चा मार्ग बतलाये कोई ।
इसलिए सत्य धर्म का संसार में प्रचार हो ॥
विश्व शुद्धि का अनादि जैन का मुख्य धर्म है ।
पाप सागर से दुःखी जीवों का नित्य उद्धार हो ॥
सत्य की खातिर रहो तैयार नित्य मैदान में ॥
अन्याय कारक का तुम्हारी आत्मा समझदार हो ॥
आपत्तियाँ चाहे हजारों क्यों न आवें सामने ।
[illegible] तैयार हो ॥

विशाल हृदय हो आपका देश धर्म सेवा के लिए ।
सर्वस्व लाने पर खुशी हो इस तरह का प्यार हो ॥
फूट का मुंह काला करके साफ हृदय से रहो ।
त्याग अवगुण का करो सद् ज्ञान हृदय संचार हो ॥
ध्यान शुभ धर्म अपना आत्म तारण के लिए ।
'शुक्ल' लेश्या ध्यान से ही जन समूह भवपार हो ॥

॥ आत्म शक्ति ॥

॥ गायन ॥

बलों में आत्मिक बल धार
आत्मिक बल का जिस घड़ी होत हृदय संचार ।
तन बल धन बल अरू पशुबल होत तुरंत फरार ।
सिंह को देख के जैसे स्यार ॥
पालक वजीर से यूं कर रहा खंदक मुनि पुकार ।
तेरा बल यह सर्व तेज हैं ओ जालिम बदकार ।
रूलेगा तू अनंत संसार ॥
करले मन माने सितम तू भी दिन दो चार ।
रोना होगा तुझ और नृप को पड़े जमों की मार ।
पाप की नौंच न होगी पार ॥
दस कंधर तू है बली जाने सब संसार ।
मैं भी दासी श्री राम की सीता अबला नार ।
परे हट ओ पापी मक्कार ॥
मेरे बल के सामने यह तेरी तलवार ।

क्या मजाल जो कर सके मेरा बांका बाल।
बताता क्या धमकी हरबार ॥
जहाँ धर्म तहाँ है विजय जहाँ अधर्म तहाँ हार।
कहाँ दुर्योधन की शक्ति कहाँ द्रौपदी चीर गज चार।
मान का अंतिम खाना ख्वार ॥
वीर सिकन्दर योद्धा था एक यूनानी खूंख्वार।
उसने आकर पराजय पाई चन्द्रगुप्त नृप लार।
झुका चरणों में फेंक हथियार ॥
धर्म वीर डरते नहीं मरने से जिनहार।
जैसे मुनि खंदक चेले धर्म वीर अवतार।
क्षमा से पाया मोक्ष द्वार ॥
गज सुकुमाल ने अग्नि धराई सिर श्मशान मंझार।
सोमल पापी पाप कमा गया चौथी नरक द्वार।
जीव को करता दुःख ख्वार ॥
भामा शाहने गिरता गिरता राणा लिया उभार।
देश धर्म इज्जत को रखा 'शुक्ल' सभी कुछ वार।
धर्म से जीना शास्त्रानुसार ॥

॥ कर्त्तव्य पालन ॥

॥ गायन ॥

तर्ज :—प्राण भारत के लिए

कर्त्तव्य पालन ना किया मनुष्य तन पाया तो क्या।
दुःख न दुखियों का हरा संसार में आया तो क्या

सगडाल नियंठा कुण्डकोलिया रसिक जिन बानी का ।
आर्द्र कुमार सम मिथ्यामान, मसलो अज्ञानी का ॥सुमर॥
खंदक गजसुकुमाल धर्म रुचि अर्जुन माली का ।
प्रवृत्ति त्याग निवृत्ति है मंत्र मोक्ष निशानी का ॥सुमर॥
काम देव अरणक सुदर्शन दृढ़ श्रद्धानी का ।
सम्यक शुद्ध व्रतधार भ्रम तज अनित्य जवानी का ॥सुमर॥
दुनिया दू झूठी जाल भयंकर है मिजमानी का ।
ले धर्म कमाई लार नहीं घर आगे नानी का ॥सुमर॥
स्वभाव में कर संतोष आसरा छोड़ बिरानी का ।
धर्म 'शुक्ल' शुभ ध्यान सदा होता ब्रह्मज्ञानी का ॥सुमर॥

॥ जैनियों जागो ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—पाप का परिणाम प्राणी भोगते संसार में।
वक्त कहने का नहीं कुछ कर दिखाओ जैनियों,
संघ की बिखरी हुई शक्ति बढ़ाओ जैनियो ॥
आचार्य और सन्तपति वाचस्पति व दिवाकरों,
कर्त्तव्य पथ पर नाम अपना सब सजाओ जैनियो ॥
अभिमान भ्रम को छोड़कर प्रभु वीर का मार्ग लगो,
गिरे हुओं को प्रेम से हृदय लगाओ जैनियों ॥
जो रहे हैं पृथक श्रद्धा सत्कार लखकर आपकी,
सब की पड़ती हुई किश्ती बचाओ जैनियों ॥
छोड़ दो किस्से कहानी हाल चौपाई वृथा,

वीर वाणी ज्ञान का प्रवाह बहाओ जैनियो ॥
निन्दा व चुगली में हुआ सब ह्रास आत्म शक्ति का,
संग्रह करो चित्त वृत्तियां मगमें लगावो जैनियो ॥
अपने अपने शास्त्र का प्रचार दुनिया कर रही,
तुम अपने व्याख्यानों को मत मिश्रण बनाओ जैनियो ॥
तत्व का व्याख्यान हो मिथ्यात्व हरने के लिए,
दुनियां को खुश करने में मत शक्ति गमाओ जैनियो ॥
भाव निक्षेपा व शुद्ध नय की तरफ आगे बढ़ो,
आत्म विकास के प्रेम की उर्मी लहरावो जैनियों ॥
'शुक्ल' शुभ दो ध्यानों का अभ्यास नित करते रहो,
पर गुण में रमना छोड़ निज गुण में समायो जैनियों ॥

॥ कर्म दशा ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—विना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है ।
शुभा शुभ कर्म प्राणी को हंसाता भी रुलाता भी
गति हो जैसे पागल की सुलाता भी बचाता भी
बनाता शाहों का भी शाह करे दर दर का याचक भी
राज ऐश्वर्य प्राणी को दिलाता भी छिनता भी ॥
खुशीमें बज रही नौवत सभी मंगल मयी गाने
कर्म चक्कर बदल उल्टा रुआता भी पिटता भी
परिवर्तन शील है दुनिया चाहे परिक्षा करो सोसो
समय का चक्र में ऐसा गिराता भी उठाता भी ॥

सदा ना एक रस कोई गतागत में कहीं देखा
क्यों कि है नियम कर्मों का छुड़ाता भी फंसता भी
जलाशय झरने हरियाली कहीं यौवन है फूलों का
खिजां करता समय गुलशन खिलाता भी सुखाता भी॥
ध्यान है चार दुनिया में शुभा शुभ वीर फरमाया।
'शुक्ल' ये आत्म का गुण बताता भी छिपाता भी॥

॥ गायन ॥

शिक्षा दे रहो जी हमको जिन वाणी अति प्यारी॥
अन्त काल से भटकत २ आर्य क्षेत्र मझारी।
पुण्य योग मानव भव मिलिया अब करले तैयारी॥
पल पल आयु जाती छिन में उमर घटे छे थारी।
चेतन होनो चेत ले प्राणी नहीं तो होगी ख्वारी॥
हाट हवेली बाग बगीचा सभी धरी रह मारी।
अन्त समय दानों की चंपा काढी लेगा थारी॥
कुटुम्ब कबीला नाना नानी स्वार्थ की महतारी।
घर की नारी प्राण से प्यारी प्रीति छोड़ उस वारी॥
आवें मौच मोले छिण मात्र सुनो नहीं ससारी।
जन्म मरण का दुःख अनन्ता कहते शास्त्र पुकारी॥
चार कौम जावे भाई बांधे खरची सारी।
पर भव जाना तुझको चेतन इसकी करो तैयारी॥
करना हो सो करले प्यार काल चन्द करे स्वारी।
ये नहीं छोड़े तुझको प्यार भवके से छे जारी॥

प्राण जाँय पण धर्म न छोडूं, मैं हूं जनक दुलारी ॥३
कुन्ती ने सुत भीम सेन को आज्ञा देई करारी।
ब्राह्मण के बदले में जाकर, पूरण कर बकचारी ॥३
दुस्साशन ने सभा भवन में पट खींचा की ख्वारी।
पर द्रौपदी ने चीर बढ़ाया अपना सत्य संभारी ॥४
सिंहिका ने अयोपुर की भारी विपदा टारी।
दिखलाया रण कौशल ऐसा भागे योधा हारी ॥५
सत्यवती चन्दन बाला की धारणी प्रिय महतारी।
अपना सत्य रखन को देखो मर गई खाप कटारी ॥६
जोहर बाई और पद्मावती गइ चित्तोर मझारी।
जोहर व्रत दिखला के कर गई भारत में बेहारी ॥७
दुर्गा और लक्ष्मी ने रण में कभी न हिम्मत हारी।
मातृभूमि की खातिर आखिर कर गई जान निसारी ॥८
जब थीं ऐसी बहिनें यहाँ पर तब थी इज्जत भारी।
जब से बहिने मग से बिछड़ी हवा बिगड़ गई सारी ॥९
बहिनों अब फिर उठो सम्भल कर निजादर्श विचारी
'अमर' हिंद को सब देशों का करदो सत्ता धारी ॥१०

॥ गायन ॥

टेर—बहनों ! मान लो री अब तो मेरा कहना।
द्वेष भाव कर दूर हमेशा मिलजुल करके रहना
गर कोई गाली भी देवे तो खुश हो करके सहना ॥१॥

तात भ्रात सम तुल्यह नर से करिए बात विचारी।
होय हक नाक खुवारी ॥
बिन कारण घर घर जाकरके कीजे न थारी म्हारी।
पर धन, सुत, गृह, पट भूषण लखि करिए ना ईर म्हारी।
गहो संतोष पिदारी ॥
पति परदेश गयो पद्मनी को तजवो सरस अहारी।
पट भूषण नूतन न पहिरवा तीज त्यौहार विनारी।
न जाओ बाग मंझारी ॥

॥ गायन ॥

तर्ज–गोरख ईश्वर जी कहवे तो।

प्यारी ! कर पति व्रत से प्रनी के जीवन पावना ए।
सुन्दर ! मिनख जमारो बार २ नहीं पावना ए ॥टेर॥

ककर, कर्त्तव्य ओहिज धारो,
खखा, खेल इन्हीं पर सारो,
गगा, गफलत मे मन हारो,
घघा, घट उजियारो पतिव्रत नेम निभावणा ए ॥
चचा, चित्त चंचल वश कीजे,
छछा, छल छिद्र तज दीजे,
जजा, जश लियां जग जीजे,
झझा, झूठो संसार एक दिन जावणा ए ॥
टटा, टेक निभाओ भारी,
ठठा, ठीक सलाह है म्हारी,

॥ गायन ॥

तर्ज़ – होली काफी।

टेर—पालो पतिव्रत धर्म प्यारी सुनो सुहागिन नारी।
सुख सम्पति जो चाहे जगत में रहो पति आज्ञाकारी
सासू स्वसुर और ननद जेठानी उनकी सेवा करो
मानो मम सीख हमारी ॥
पति आज्ञा जो करे उलंघन है वो कुलटा नारी।
उनके साथ बात करने में लागे लाछन भारी।
लिखयो यह नीति मझारी ॥
पति, जो आज्ञा देवें तुमको लेवो यह सिर धारी।
पीयू को समझो सब सुख दाता शोभा सुख भण्डारे
कहें यों श्रुतियाँ सारी ॥
देखो सन्तुरी बातों कैसी थी वह सीता नारी।
पतिव्रत धर्म सभी पहिचानो तज दिए महल अटारी।
पत्नी धन जनक दुलारी ॥
विद्या पढ़ सुलभना संग ऐसी ज्ञान विचारी।
कैसा पतिव्रत रखा जीवन में उनकी सुध लो सारी।
बना विदुषि सब नारी
चैनसुख [illegible] [illegible] सुनो सुलक्षण नारी।
[illegible] हो वैसा ही नारी।
[illegible]

कहें तुमको सभी सज्जन यह लड़की धर्म धारी है ॥
यदि तुम चाहो गाने को तो गावो पंच कल्याणक ।
कहें सब हर्ष लाकर के देखो यह नारी है ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—नर भव निकमो जाय ।

टेर—ऐसी पतिव्रता नार मिली पुन्य पुण्य वान को ॥
पंचो टोरी अन्न जिमावे समझे तिय भगवान को ।
दासी समान हुक्म उठावे बोले मिष्ट जबान को ॥
सासु ससुर का मात पिता ज्यों माने वह फरमान को ।
जेठा नणदा बन्ध भ्रात ज्यों समझे पर इन्सान को ॥
कुलोद्धारिणी कुल वर्धक नहीं घर अगार कुलवान को ।
सत्य सलाह दे समझावे लाभ और नुकसान को ॥
विपत्ति में सहायक पति को देवे साथ धर्म ध्यान को ।
पति रक्षक अति क्षमा वान हो आदर करे महमान को ॥
देव गुरु का भक्ति करे है अभ्यास करे निज ज्ञान को ।
गुरु प्रसाद चांदमल कहे सबर लिया [illegible] को ॥

॥ गायन ॥

तर्ज [illegible]

[illegible] नार इन्सान को ॥
[illegible] जबान को ।
[illegible] दुकान को ॥
[illegible] है [illegible] को ।
[illegible] अभिमान को ॥

॥ गायन ॥

तर्ज़—रसिया नवीन ।

मैं अंगरेजी पढ़ गई बालम खाना नहीं पकाऊंगी ॥
मैं अंगरेजी पढ़ कर आई सर्टीफिकेट बी० ए० का लाई
हिन्दी उर्दू पढ़ी नहीं अब नाक कटाऊंगी ॥
दाल भाजी रोटी का खाना ये मेरे मन ने नहीं माना ।
सोडा बिस्कुट लेमनेड फिर चाह उड़ाऊंगी ॥
मैं नहीं चूल्हे को जिलाऊं फूंक फूंक कर नहीं आँख फुड़ाऊं
[illegible] के दो सर्वेन्ट उन्हीं से टहल कराऊंगी ॥
देवर [illegible] और ससुर सासू मुझे देख सब हारें आँख ।
अपना [illegible] अलहदा मैं हो जाऊंगी ॥
[illegible] अपने बंगले आप बिताऊँ ।
[illegible] मैं मौज उड़ाऊंगी ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible] —टेर
[illegible] पानी जाना ।
[illegible] नगरी [illegible] ॥
[illegible] सारा [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] में [illegible] ।
[illegible] में [illegible] ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—रसिया नवीन।

पहनों वस्त्र स्वदेशी बहनों ! कहनों मानों हमारो ए।
खादी के कपड़े तन धारो, जिन से होसी भलो तुम्हारो।
प्यारो भारत देश इसे अब मति बिसारो ए ॥
कात हाथ से सूत सहेली खादी बनवावो अलबेली।
पहिले की मर्यादा सम्बी जिसे नाहीं विसारो ए ॥
झीणा कपड़ा तन पर धारो दिखे सारो बदन उघारो।
निर्लज की पोषाक त्याग तन लज्जा धारो ए ॥
झीणा कपड़ा से सुन प्यारी शीत घाम नहीं बचे करारी
उनकी रक्षा करो वस्त्र मोटे तन धारो ए ॥
धर्म अहिंसा बहिन तुम्हारो चर्खे के कपड़े तन धारो।
कैसे होसी भलो बहिन दिल बीच विचारो ए ॥

॥ गायन ॥

तर्ज—नखड़ा अंसे तो पड़जा।

सवर म्हाने चर्खो मंगवादो रे कातां झीणो सूत
जिनकी म्हाने रेजी मंगवादो ॥

गणां रे रहियो फिर—चाले अनोखी चाक।
नोकर चाकर शाही सबकी, धरी रह गई धाक ॥
भारत देश दुनिया तक को, माथा को सिरमोड़।
आज सभी जगह इसी देश की मिल रही है होड़पे होड़
सब देशां ने पालना मर बनिया आज आजाद।
घर की खादी पहरन लागया होगया आब सादा साद ॥

॥ गायन ॥

तर्ज़-सीता माता की गोद में हनुमत डाली मूंदड़ी,
ओढ़ो रे ए अयि प्यारी ! पतिव्रत धर्म की चूंदड़ी।
ओढ़ो रे ए सुहागिन। शील सुरंगी चूंदड़ी ॥

मन मलमल देसी मंगाओ
जिनको ज्ञान गुलाबी रंगाओ
उन पर गुण गोटा चढ़वाओ
ऊपर विनय बेल बनवालो चम चम चमके चूंदड़ी ॥

सुरमो शरमाई को सारो
मिस्सी मीठे वचन उचारो
बिन्दी पति प्रेम की धारो
नथ नो पति नाम की राखो जगत लखी है चूंदड़ी ॥

चूड़ी चतुराई की पहरो
कंकण ज्ञान तणो है नेरो
झेला झंझ वचर ने फेरो
प्यार धार हर्ष को हार के हरदम ओपे चूंदड़ी ॥

साड़ी शील धर्म की पहिनो
कबजो मन कबजे कर लेनो
लहंगो लघुताई को पहिना
थारो प्यारो रसे वेश के चोखी लागे चूंदड़ी ॥

सास स्वसुर की सेवा कीजे
घर को काम शिघ्र कर लीजे

५० पचास फुटरी लागे संसार की आस।
६० साठ शरीर होग्यो काठ।
७० सत्तर उकचुक होग्या नखतर।
८० अस्सी अबे जीवे तो थारी खुशी।
९० नव्वे अबे जीवे तो दुनिया हव्वे।
१०० एके उपर मिंडी दो अबे दुनिया में निर्भय सो

॥ गायन ॥

तर्ज—बंशरिया कहां भूल आये···

धर्म सब भूल गये कैसे दिन आये।
महल के उपर तारा रानी बीच बाजार बिकाये।
आजकल की नारी पति पर अपना हुक्म चलाये ॥१॥
प्रात: काल उठ मात पिता को रामचन्द्र सिर नवाये।
आजकल के बेटा देखो छे जूता धमकाये ॥२॥
गया सुदर्शन वीर वंद्वा माली भय विसराये।
अब तो बात ही बात में धर्म छोड़ते जाये ॥३॥
गज सुकमाल सही सिर अग्नि स्कन्दक कष्ट उठाये।
आज परिषह आने पर मुनियों का जी घबराये ॥४॥
प्रभू भजन सत्संग छोड़ अब नित्य सिनेमा जाये।
चौथमल कहे चार माल धर्म किया सुख पाये ॥५॥

॥ शुभा शुभ भाग्यके फळ ॥

एक शृंगार करें नित नूतन, एक भरें घर ही घर पानी।
एक तो बाँझ या दासी कहावत, एक कहावत है ठकुरानी
॥१॥
एक तो पाट पिताम्बर ओढ़त, एकन को है चिंदी पुरानी।
भाग्य शुभ फल देखले डिगर, तो भी न चेतत है शठ प्राणी॥२॥

॥ पुण्य की खूबी ॥

[illegible] हार्दीन के घर।
होता है पुण्य पाप [illegible]।
नर दीन [illegible] आयस है।
[illegible] सुनाई॥
[illegible] आदिका।
[illegible] की [illegible] दिखाई।
[illegible] विचार [illegible]।
[illegible] आई।

—* समाप्त *—